केशवसुत

प्रभाकर माचवे

MT
891.461 3
K 481 M

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
891.461 3
K 481 M

अस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूप में राजा शुद्धोदनक दरबारक ओहि दृश्यके देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक मायरानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचामे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिवद्ध कय रहल छथि। भारत मे लेखन कलाक ई प्रायः समसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्य के निर्माता

केशवसुत

लेखक

प्रभाकर माचवे

अनुवादक

अमरनाथ झा

साहित्य अकादेमी

Keshavsut : Maithili translation by Amarnath Jha of Prabhakar Machwe's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1989)

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 891.461 3 K 481 M
00117169

प्रथम संस्करण : 1989

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700 029
29, एलडाम्स रोड, तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Indian Institute of Advanced Study SHIMLA
117169
10/12/04

MT
891.461 3
K 481 M

मुद्रक
रुचिका प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110 032

अनुक्रम

भूमिका	7
जीवन परिचय	10
प्रकृति	22
केशवसुतक किछु कविता	41
नव सिपाही	41
अछोप बालकक प्रथम प्रश्न	42
मूर्ति भञ्जक	43
श्रमिकक भुखमरी	44
लबालब	45
कतए जाए रहल छी	46
दुर्मुख	47
प्रकृति ओ कवि	48
किछु स्फुट पंक्ति	48
आरम्भमे ने छल भूख, ने छल पिआस	49
हमके थिकहुँ ?	50
तुरही	50
झपूर्झा[1]	54
नगर दिशि प्रस्थित एक मित्रक प्रकोष्ठ देखि	56
परिशिष्ट	59

भूमिका

केशवसुतक नाम सुनि मराठी कविता-प्रेमीक मनमे ओहने भाव जाग्रत होइत अछि जेहन भाव हालीक नाम सुनि उर्दू भाषाभाषीकेँ, अथवा माइकेल मधुसूदन दत्तक नामसँ बंगला भाषाभाषीकेँ, वा सुब्रह्मण्य भारतीक नाम सुनि तमिल भाषा-भाषीकेँ वा नर्मदक नामसँ गुजराती भाषाभाषीकेँ जाग्रत होइत अछि। उपर्युक्त प्रत्येक कवि अपन-अपन भाषामे आधुनिक कविताक अग्रदूत रहथि। ई लोकनि गीतकार रहवाक अतिरिक्त नव-नव भावभूमि प्रस्तुत कएनिहार रहथि, आओर तेँ केवल काव्यात्मक उक्ति ओ शब्द रचनहिटासँ नहि, अपितु जीर्णशीर्ण रूढ़िकेँ त्यागि एक नवीन पथ प्रशस्त करवामे सेहो अग्रणी रहथि। ई कवि लोकनि एहि शताब्दीक आरम्भिक कालमे भारतीय साहित्यक इतिहासमे महत्त्वपूर्ण पथचिह्न थिकाह, पाश्चात्य सांस्कृतिक प्रवाहक प्रति राष्ट्रीय जागरण द्वारा जे प्रतिक्रिया भेल तकर दृष्टान्त हिनका लोकनिक जीवन थिक।

इतिहासमे एहन-एहन कतिपय कविक उल्लेख अछि जे जीवन भरि अज्ञात ओ उपेक्षित रहलाह तथा हुनका लोकनिक विषयमे हमरा लोकनिकेँ बड़ कम बात बुझल अछि। कालिदास कोन समयमेँ उत्पन्न भेल रहथि से एखन धरि अनिर्णीत अछि, ओमर खैय्यामक रुबाइत एखन धरि सम्पूर्ण रूपमे प्राप्त नहि भए सकल अछि, होमरक जन्मस्थानक प्रसंग एखन धरि सात वा नओ गोट नगरक बीच विवाद अछिए। केशवसुत हालक कवि थिकाह तथापि हिनकहु जन्मतिथिक प्रसंग मतैक्य नहि अछि। मराठीक एहि महान कविक केवल 132 गोट कविताक एकटा संग्रह उपलब्ध अछि जे हिनक मृत्युक पश्चात् प्रकाशित भेल अछि।

केशवसुतक कवित्वक मूल्यांकन हेतु स्वर्गीया कुसुमावती देशपाण्डे रचित 'मराठी साहित्यक इतिहास'सँ निम्नलिखित उद्धरण द्रष्टव्य थिक :—

"मराठी कविताक हेतु केशवसुतक अवदान ओहने महत्त्वपूर्ण अछि जेहन मराठी उपन्यासक हेतु हरिनारायण आपटेक अवदान अछि। ई ओहिमे एकटा यथार्थ कारयित्री शक्ति संयोजित कएलैन्हि। देश ओ विदेशसँ निनादित वाग्ध्वनिक आवर्त्तमे केशवसुत अपन स्वर मुखरित कएने रहथि। प्राचीन परिपाटीक लीख पर हुनकहु प्रशिक्षु रहि अभ्यासकार्य करए पड़ल छलैन्हि, किन्तु जखनहि हुनका अपन अभिव्यंजना-शैलीक वास्तविक स्वरूप अवगत भए गेलैन्हि तखनहि मराठी कविता-मे ओहिसँ एक नवीन युगक आविर्भाव भए गेल।

"केशवसुतक प्रारम्भिक कविता सब उपलब्ध नहि अछि। कहल जाइत अछि जे ओ बहुत कमे वएससँ परम्परागत छन्द सबमे, रूढ़ वर्णनात्मक वा उपदेशात्मक नीक पद्य रचना करैत छलाह। हुनक प्रथम उपलब्ध कविता जे 1885 ई० में रचित भेल छल, से रघुवंशक एक अंशक अनुवाद थिक।···ओहि समयक हुनक प्रेम कविता पर शृंगारिक संस्कृत काव्यक स्पष्ट प्रभाव अछि। हुनक शैली तथा बिम्ब-योजनामे सेहो संस्कृत काव्यक ओ संस्कृतातिनिष्ठ पारम्परिक मराठी कविताक अनुसरण पाओल जाइत अछि आओर तेँ ओहिमे विविध वार्णिक वृत्त तथा वासनात्मक स्थूल विम्बक प्रयोग भेटैत अछि।···पाछाँ आबि ओ दैनिक वाग्धारा आओर लोकोक्तिक प्रयोग प्रौढ़तापूर्वक करए लगलाह जकरा ओहि समयमे वा वर्त्तमानहु समयमे रूढ़िवादी लोकनि कवितारचनाक हेतु अनुपयुक्त तथा कर्णकटु मानल। ओ अंग्रेजीकाव्यक 'ओड' रचनाक शैलीमे सुगठित, अखण्ड ओ दीर्घ कविताक रचना कएकेँ श्लोकबन्धमे एक नवीन ऊर्जा प्रदान कएल। हुनक कवितामे सर्वप्रमुख परिवर्त्तन-भाव जे परिलक्षित होइत अछि से थिक आत्मनिष्ठता-भावक अभिव्यञ्जनाक प्रवृत्ति।···हुनक कल्पना-विधानमे एकटा नवीन आत्मविश्वास अछि, काव्यक शक्ति ओ भूमिकाक प्रसंग हुनक मान्यतामे एकटा नव ओज अछि, तथा अभिव्यक्तिमे असाधारण प्रामाणिकता अछि। वस्तुतः हुनका संग मुक्तक गीतिकाव्यक एक नवीन परम्पराक जन्म भेल अछि।

"एहि प्रकारक परिवर्त्तन अधिकांशतः अंग्रेजी कविताक प्रभावसँ आएल छल। कुंटे, महाजनी प्रभृति अन्यान्य कवि लोकनि मराठी कवितामे एहि प्रकारक प्रभावक सूत्रपात पूर्वहि कए चुकल रहथि। किन्तु से नीक जकाँ जड़ि नहि रोपि सकल छल; अनुवाद वा असंगत अनुकरणक स्तरहि धरि से सीमित छल। केशवसुत सेहो किछु अंग्रेजी कविताक अनुवाद कएने रहथि, जाहिमे किछु एहन अछि जकरा अनुवाद नहि कहि छायाग्रहण कहल जाएत।···किन्तु अंग्रेजी कविताक अध्ययनसँ ओ जे किछु अवगत कए सकलाह, ताहिसँ काव्यविषयक हुनक अवगति तथा शैलीमे मार्मिक परिवर्त्तन आएल।

"तात्कालिक मासिक पत्रिका 'काव्यरत्नावली' में प्रकाशित हुनक कविता पढ़ला पर विजनमे कोनो दुर्लभ कुसुम अवलोकन करबाक आनंद प्राप्त होइत अछि। अपन गामघरक आकस्मिक स्मृतिसँ, मित्रक आवासगृहमे ताला बन्द देखलासँ, प्रियजनक विरहसँ, वा कविताक प्रवृत्तिक प्रसंग व्यक्तिगत अनुभूति सबसँ ओ कविता सब सहसा स्फुरित भेल अछि। प्रकृतिक प्रसंग हुनक एक नवीन भावना अछि।···हुनक मत अछि जे 'प्रकृतिक काव्य' पक्षीक कलरवमे वा वर्षाक संगीतमे ताहि रूपमे व्यक्त होइत रहैत अछि जकर समता कविक शब्द कदापि नहि कए सकैत अछि। ओकर सौन्दर्य अपन नित्यनूतनतामे चिरन्तन अछि। एहि प्रकारक चेतना तथा ताहिमे अपनाकेँ पूर्णरूपेँ समर्पित कए देबाक क्षमताक फलस्वरूपहिँ

केशवसुतक स्फुट कविता सबमे एहन मनःस्थिति तथा वातावरण अत्यंत आयासहिसँ निर्मित भए गेल अछि, यद्यपि की ई कविता सब साक्षात् रूपसँ वर्णनात्मक नहि अछि। केशवसुतक उत्तम कविता सबमे प्रकृतिक प्रति भावुकता ओतप्रोत अछि।··· एहि प्रकारक अनेको कविता अपन सरलता तथा विचारात्मकताक कारण वर्ड्सवर्थक स्मरण करबैत अछि।

"प्रायः आगरकरसँ प्रभावित भएकेँ केशवसुतक मन मनुष्यक समता तथा समाजसुधारक त्वरित आवश्यकताक तीव्र अनुभूतिसँ ओतप्रोत अछि। अस्पृश्य शिशु तथा क्षुधित श्रमिकक विषयमे ओ बड़ मार्मिक रीतिसँ लिखने छथि। हुनक एकटा अत्यन्त सशक्त ओ सुप्रसिद्ध कविता तुतारी (तुरही) सम्पूर्ण सामाजिक अन्धविश्वास तथा कट्टर रूढ़िवादितासँ अद्भूत आलस्यकेँ छिन्न-भिन्न करबाक आह्वान थिक। हुनक 'नवसिपाही'मे सेहो ततबे प्रभावपूर्ण मर्मस्पर्शिता भरल अछि।

"केशवसुतक उत्तम कोटिक कविता सब विचार-प्रधान अछि, ओहिमे सृजन प्रक्रियाक रहस्यक प्रसंग ऊहापोहक प्रवृत्ति अछि। एकाकीपनक भावबोध करएबाक संगसंग ओहि कविता सबमे एकटा अध्यात्मिक विश्रामस्थलक हेतु जिज्ञासाभाव अछि। ओहिमे अज्ञात ओ अप्रमेयक प्रति प्रगाढ़ संलग्नता अछि। एक एहने कविताक शीर्षक थिक 'झपूर्झा'। बालिका सब परम्परागत 'झिम्मा' नामक खेल खेलएबामे मग्न अछि, तथा ओकरा लोनिकक तीक्ष्ण नृत्यलयक अनुकरणमे एहि कवितामे अर्थशून्य प्रतीत भेनिहार शब्दावली गढ़ल गेल अछि। कवि एहि कवितामे मनक कारयित्री स्थिति, एक उच्च अनुभूतिक विविध क्षेत्र, तथा नक्षत्रमण्डलातीत विश्वक संग एकर सहभावक वर्णन करबाक प्रयास कएने छथि। 'हरपलेश्रेय' (लुप्त आदर्श) शीर्षक कवितामे एक विचित्र संसारमे विलीन भए जएबाक भावना तथा सर्जनामय निवासभूमि लेल अतृप्य तृष्णा व्यक्त कएल गेल अछि। एहिमे वर्ड्सवर्थक 'अमरताक आभासक प्रति सम्बोधन' (ओड टु इंटिमेशंस ऑफ इम्मोर्टेलिटी) शीर्षक कविताक गम्भीर प्रभाव अछि किन्तु नेँ ई तकर अनुकरण कदापि नहि थिक। केशवसुतक दार्शनिक कविता सबमे पाश्चात्य काव्यविचार तथा भारतीय दार्शनिक कविता सबमे पाश्चात्य काव्यविचार तथा भारतीय दार्शनिक मान्यताक समन्वय अभिव्यंजित अछि।"

एहि प्रकारेँ केशवसुतमे भारतीय पुनर्जागरणक ओ तीनू महत्वपूर्ण गुण एकत्र भेटैत अछि जे उन्नैसम शताब्दीसँ आरम्भ भएकेँ रवीन्द्रनाथठाकुरक कृति धरिमे व्याप्त अछि, यथा प्रकृतिक प्रति सर्वेश्वर भाव, मातृभूमिकेँ परतन्त्रतासँ मुक्त करबाक आवेश तथा सामाजिक-अन्याय-शृंखलाकेँ छिन्न-भिन्न कएकेँ मानवतावादक महत्त्व प्रमाणित करबाक उत्साह। ई सब विषय इतिवृत्तात्मक कहल जइतहुँ कविता पर्यन्तमे परिगृहीत भेल अछि। वर्ड्सवर्थ, शैली तथा ब्राउनिंग एहि रोचक भावधाराक मार्गनिर्देशक छलाह यद्यपि एकर उद्भव उपनिषद् तथा कालिदासक रचनहि सबमे भेल छल से मानल जाइत अछि।

जीवन-परिचय

केशवसुतक जन्मतिथि तथा जन्मस्थान दूनू विवादास्पद अछि। सर्वप्रथम, हुनक सहोदर छोट भाए सीताराम केशवदामले हुनक जीवन चरित्र लिखने रहथि, हुनका लगमे केशवसुतक जे जन्मकुण्डली छल, ताहि आधार पर ओ भारतीय तिथि फाल्गुनवदि 14, शाके 1787कें हुनक जन्मतिथि मानल अछि जे 15 मार्च 1866 ईशवी होइत अछि। एहि तिथिक प्रसंग अनेक आपत्ति उठाओल गेल अछि। किछु व्यक्तिक कथन अछि जे जन्मकुण्डली-रचनामे भ्रम भए गेल छल, किछु व्यक्ति भारतीय तिथि गणनामे अधिकमास जोड़ैत छथि, आओर तदनुसार ईशवी सनक तारीखक गणनामे समानता नहि भेटैत अछि। किछु प्रमाणक अनुसार केशवसुत 7 अक्टूवर 1866 ई०कें जन्मल रहथि, यद्यपि हुनक कविता रचनाकें नियमित रूपसँ प्रकाशित कएनिहार 'काव्यरत्नावली' नामक पत्रिकामे, दिसम्वर 1905 ई० क अंकमे मुद्रित मृत्युलेखमे उल्लेख अछि जे "हुनक जन्म मार्च 1866मे भेल छल।' 1906 ई०क जनवरी मासक 'मनोरञ्जन' नामक पत्रिकाक मृत्युलेखमे सेहो एही वातक पुनरावृत्ति भेल अछि। एहि प्रकारें सब वातकें ध्यान मे रखला पर एतवा निश्चयपूर्वक कहल जाए सकैत अछि जे हुनक जन्म 1866 ई०मे भेल छल, तिथिक निर्णयक प्रसंग भने एकवाक्यता नहि रहओ। श्रीमती विजया राजाध्यक्ष एहि विषय पर 'सत्यकथा' (मार्च 1966)मे अपन विस्तारपूर्ण लेखमे एहि निष्कर्ष पर आएल छथि जे केशवसुतक जन्मक विषयमे कोनोटा तिथि प्रमाणिक रूपें टीपल गेल होअए, तकर निश्चित प्रमाण अनुपलब्ध अछि आओर हुनक मन्तव्य छैन्हि जे 'कदाचित् कविकें सेहो अपन जन्मतिथिक पता नहि रहैन्हि।'

हुनक जन्मस्थान तथा मृत्युतिथिक प्रसंग सेहो एही प्रकारक विवाद अछि। यद्यपि हुनक कतेको जीवनी-लेखकक मान्यता अछि जे महाराष्ट्रक कोंकण जिलामे रत्नागिरिक समीप मालगुंड गाममे हुनक जन्म भेल छल, मुदा स्कूलक रजिष्टरमे हुनक अपनहि हाथसँ लिखल गेल प्रविष्टिक अनुसार दापोली जिलामे वलणे नामक गाममे हुनक जन्म भेल छल। हालमे महराष्ट्र सरकार जखन हुनक जन्मस्थान पर एकटा समुचित स्मारक निर्माण करएबाक प्रसंग एक सभा आयोजित कएल तखन हुनक तथाकथित जन्मगृहक प्रसंग सेहो गम्भीर विवाद उत्तन्न भए गेल छल।

हुनक मृत्युक प्रसंग सेहो यद्यपि आब एतवा निश्चित भए गेल अछि जे 39

वर्षक अल्प वएसहिमे 7 नवम्बर 1905 ई०क मध्याह्नमे हुबलीमे प्लेगक कारण हुनक देहान्त भए गेल छल, तथा तकर आठ दिनक पश्चात् 15 नवम्बर 1905 ई०कें हुनक पत्नीक मृत्यु भेल छलैन्हि, परन्तु श्री न० शं० रहालकर तथा केशवसुतक जीवनीलेखक अनुज (सीताराम केशव दामले) 2 नवम्बर 1905 ई०कें हुनक मृत्यु तिथि मानने छथि। केशवसुतक जीवनी-लेखक अनुज हुनका सँ 12 वर्ष छोट रहथि तथा 'केशवसुतांची कविता' (केशवसुतक कविता) क द्वितीय संस्करणक भूमिकालेखमे ई प्रथम रेखाचित्र प्रकाशित भेल छल। पाछाँ आबि केशवसुतक एकटा भातिज परशराम चिन्तामण दामले ओही पोथीक चतुर्थ संस्करणमे एहि भ्रान्तिपूर्ण तिथि-निर्णयक परिमार्जन कएल। तें 7 नम्बर 1905कें केशवसुतक परलोकगमनक तिथि निश्चितरूपें मानल जाए सकैत अछि।

हुनक कवितामे हुनक जन्मस्थानक दू ठाम उल्लेख भेटैत अछि। 'नैऋत्येक डोलवारा' (नैऋत्य दिशाक वायु) मे ओ अपन गाम 'मालगुंड' कें संस्कृत रूपान्तरित नाम 'माल्यकूट' कहिकें उल्लिखित कएने छथि। किछु समालोचकक मान्यता अछि जे 'एक खेडे' (एकटा गाम) शीर्षक कवितामे संस्मरणात्मक रूपमे जाहि गामक वर्णन अछि से पूर्णतः वलणें सदृश अछि, आओर ओही ठामक गाछवृक्ष, फूल, पशुपक्षी इत्यादिक वर्णन ओहिमे कएल गेल अछि आओर 'समुद्रमे चलैत अनेक नाओ तथा जहाज' सेहो तादृशे वर्णन थिक।

पु० के० दामले हुनक वंशवृक्ष निम्नलिखित रूपमे उपस्थित कएने छथि—

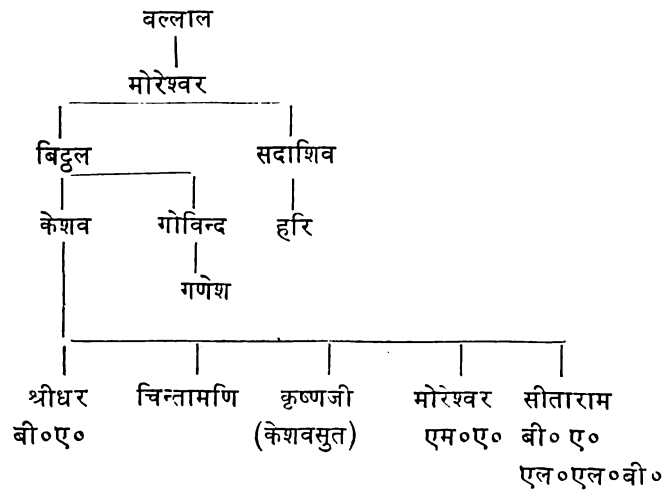

दामले लोकनि चित्पावन कोंकणस्थ मूलक ब्राह्मण रहथि तथा रत्नागिरिक समीप कोलंबे नामक गाम हिनका लोकनिक मूलनिवासस्थान छल। केशवसुतक

पिता केशव विट्ठल उर्फ केसोपंत दामले मराठी पाठशालामे शिक्षाप्राप्त कएलाक पश्चात् पुस्तैनी कृषिकर्म छोड़ि अध्यापन कार्य अपनाओल। पन्द्रहमवर्षक वएसमे केशवसुतक पिताकेँ अध्यापनवृत्ति प्रारम्भ करए पड़लैन्हि। ओ सरकारी शिक्षा सेवामे तीन रुपैया मासिक वेतन पर नियुक्त भेल रहथि जे वढ़ैत-वढ़ैत तीस रुपैया मासिक वेतन धरि वढ़ल रहैन्हि। हुनक स्वास्थ्य नीक वहि रहैत छलैन्हि आओर तेँ ओ दस-एगारह रुपैयाक पेन्सन पर सेवा-निवृत्त भेल रहथि। नखन ओ दामले परिवारक मित्र विश्वनाथ नारायण मंडलीक नामक एकटा प्रसिद्ध नेता तथा जमीन्दार क वलणे ग्राम स्थित भूमिक निरीक्षण ओ कार्यप्रवन्ध करवामे नियुक्त भेलाह। केशवसुत 'सिंहावलोकन' शीर्षक अपन एकटा कवितामे एहि गामक नामोल्लेख कएने छथि। ई कविता वर्ड्सवर्थक 'दि प्रिल्यूड', (उपोद्घात)क शैलीमे लिखित अछि। यद्यपि केसोपंतक आमदनी वड़ कम छल, तथापि ओ विना ऋणपैंच लेने सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करैत छलाह तथा अनुशासन, स्पष्टवादिता एवं संकल्पशक्ति हेतु विख्यात रहथि। केशवसुत अपन कविता सवमे पिताक हेतु वड़ आदर व्यक्त कएने छथि। केसोपंतक मृत्यु 1893 ई० मे भेल।

केशवसुतक माए मालदौलीक जमीन्दार करन्दीकर लोकनिक परिवारक छलीहि, ओ अपन वापक एकमात्र पुत्री रहथि। 1902 ई० मे उज्जैन मे हुनक मृत्यु भए गेल। केशवसुत अपन माएसँ भावुकता, आस्तिकता, उदारता, तथा व्यापक मानवतावाद आदि गुण प्राप्त कएने रहथि। माएक मृत्यु पर केशवसुत एकटा विलापिका-कविता सेहो लिखने रहथि।

केशवसुत अपन माए-वापक चारिम सन्तान रहथि। हुनका पाँच भाए तथा छओ वहिन छलथिन्ह। सवसँ जेठ भाए एगारह वर्षक अवस्थामे पानिमे डुवलासँ मरि गेल रहथिन्ह। दोसर छलाह श्रीधर, जे वड़ मेधावी छात्र रहथि, तथा हाइस्कूल परीक्षामे रत्नागिरि मे प्रथम स्थान प्राप्त करवाक कारण जगन्नाथ शंकर शेट छात्रवृत्ति प्राप्त कएने रहथि। ओ एलफिन्सटन कालेजसँ 1882 ई० मे बी०ए० परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह आओर तखन वड़ौदामे नवे स्थापित भेल एकटा कॉलेजमे संस्कृतक प्रोफेसर नियुक्त भेलाह। किन्तु वर्षाभ्यन्तरहिमे जनवरी 1883 ई० मे सन्निपातज्वरसँ हुनक मृत्यु भए गेल।

केशवसुतक आरम्भिक जीवन वहुत-किछु उपेक्षित रहलैन्हि। अपन छोट भाएक संग रत्नगिरि जिलाक खेड़मे ओ प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कएल। अंग्रेजीक अग्रिम शिक्षा प्राप्तिक हेतु दूनू भाँइ वड़ौदा पठाओल गेलाह। दूनू भाँइक विवाह तात्कालिक प्रथाक अनुसार वड़ कम वएसमे भेल, केशवसुतक आयु तखन 15 वर्षक छल आओर हुनक छोट भाए 13 वर्षक रहथि। केशवसुतक पत्नी रुक्मिणी बाइ चिनले परिवारक रहथि आओर विवाहक समय हुनक वएस 8 वर्षक रहैन्हि। ओ बहुत दयालु तथा परिश्रमी रहथिन्ह, मुदा कोनो विशेष सुन्दरि नहि रहथिन्ह, मात्र तत-

वेटा बात हुनका प्रसंग ज्ञात अछि। पति-पत्नी दूनू गोटें लज्जालु, संकोची तथा समाजभीरु स्वभावक रहथि। केशवसुतकें तीनि कन्या छल, मनोरमा, वत्सला तथा सुमती। ओ अपन एक कविता 'म्हातारी' मे अपन दोसर कन्याक उल्लेख कएने छथि। केशवसुतक श्वसुर केशव गंगाधर चितले खानदेश जिलाक चालिस गाँवमे एक मराठी पाठशालाक हेडमास्टर रहथि।

केशवसुतक वाल्यावस्थाक प्रसंग मात्र एतवे ज्ञात अछि जे ओ शरीरें बड़ दुर्बल तथा स्वभावें झनकटाह रहथि। दुर्बल रहवाक कारण ओ वेसी दौड़धूप बाला वा परिश्रम बाला खेलमे सम्मिलित नहि भए सकैत छलाह। दूर-दूर धरि एकसरे टहलैत रहब हुनका विशेष प्रिय छल तथा बड़ काम बाजल करथि। हुनक माएक कहब छल जे केशवसुत कनेक सनकी स्वभावक रहथि। हुनक वाह्यरूप केहन छल, ताहि प्रसंग यद्यपि कोनो साक्ष्य नहि अछि, तथापि किछु मित्र उल्लेख कएने छथिन्ह जे "हुनक आकृति विचारपूर्ण तथा गम्भीर छल"···(किरात)। "जखन ओ दोसराक संग गप करए लागथि तखन आँखि नीचाँ भए जाइन्हि, किन्तु जखन कखनहुँ आँखि उठाबथि तखन से तीक्ष्ण ओ भेदकरूपसँ चमकि उठैत छल। "(विनायक एस करंदीकर)। "ओ पाँच फीटसँ किछु वेसी लम्बा छल होएताह।" (गद्रे)।

ओ गोर, गोलाकृति मुखमण्डलयुक्त रहथि तथा हुनक ललाट पर रेखा ओ वल सदा परिलक्षित होइत छल। एकवेर हुनक अध्यापक एहि प्रकारक दुर्मुख मुद्राक हेतु हुनका डँटने रहथिन्ह। केशवसुत 'दुर्मुख लेला' शीर्षक अपन कवितामे लिखने छथि जे—

मुख अछि एकर कुरूप मुदा विधि चाहथि तँ
रचत नवकाव्य ई।
हर्षित होएत पढ़िकें जग जकरा, ओ जनमन होएत
आन्दोलित।
एहि दुर्मुखकेर आनन सँ होएबा लेल अछि
निस्यन्दित।
सुन्दर सरस वाङ्मय निर्झर प्रवहमान चतुर्दिक।
केवल अहीं नहि, अहाँक सन्तानहु जकरा पीबि पीबि
रहत अघाएल।
केओ नहि पूछल तखन 'कविवरक छल आनन
केहन।
(1886)

एहि तथ्यसँ सम्बन्धित एकटा बात इहो अछि जे ई अपन फोटो खिचवाएब पसिन्द नहि करैत छलाह। यद्यपि हिनक भाइ लोकनिक फोटो आइ उपलब्ध अछि

किन्तु केशवसुतक जीवनकालमे हुनक ने फोटो खिचल गेल आओर ने चित्रे बनबाओल गेल। एक वेर उज्जैनमे, जतए हुनक जेठ भाए दर्शनशास्त्रक प्रोफेसर रहथिन्ह, एहि दामले परिवारक सब सदस्य एकत्रित भेल रहथि आओर ई प्रस्ताव राखल गेल छल जे समस्त परिवारक एकटा फोटो खिचवाओल जाए, किन्तु केशवसुत ताहिमे सम्मिलित नहि भेलाह।

हुनक प्रारम्भिक शिक्षाप्राप्तिमे समय-असमय वाधा उत्पन्न होइतहि रहल होगतैन्हि तथा कष्टमय जीवन व्यतीत करए पड़ल होएतैन्हि। हुनक रचित एकटा कवितासँ पता लगैत अछि जे ओहि समय गुरुजी लोकनि बच्चा सबकेँ बड़ कठोरता पूर्वक पीटल करथि. तथा दण्डित करथि। ताहिसँ केशवसुतक हृदय पर एहन गम्भीर आघात लागल होएत जे कदापि चोखाए नहि सकल होएत।

1882 ई० में ओ अपन जेठ भाए श्रीधरकेशवक ओहिठाम बड़ौदा गेलाह जे विशेष योग्यताक संग (डिस्टिंकशनक संग) स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कए संस्कृत तथा गणितक प्रोफेसर भेल रहथि। दुर्भाग्यवश केशवसुत अपन जेठ भाएक संग आठमाससँ बेसी नहि रहि सकलाह। श्रीधर 23 वर्षक अवस्थामे ग्रेजुएट उपाधि प्राप्त करबाक केवल एक वर्ष पश्चात् सन्निपात ज्वरसँ ग्रस्त भए कालकवलित भए गेलाह। एहिसँ परिवारकेँ भीषण आघात लागल। केशवसुतकेँ शिक्षाक हेतु अपन माम रामचन्द्र गणेश करंदीकरक समीप जाए पड़ल जे वर्धा में ओकील रहथि। ओहि समय वर्धामे अंग्रेजी शिक्षाक समुचित प्रबन्ध नहि छल। नेँ कृष्णाजी तथा हुनक छोट भाए मोरोपंतकेँ नागपुर जाए पड़ल। किन्तु हुनक माए-बाप शिक्षाक व्यय नहि जुटाए सकलथिन्ह तथा नागपुरक भयंकर गर्मी केशवसुतक दुर्बल स्वास्थ्यक हेतु असह्य छल। सात मास धरि केशवसुत नागपुरमे रहलाह। एहि सात मासक अवधिमे मराठीक प्रसिद्ध कवि रेवरेंड वामन तिलक तथा प्रो० पटवर्द्धनक संग कविक परिचय बढ़ल। प्रो० पटवर्द्धनक प्रशंसामे ओ कविता सेहो लिखने छथि।

रेवरेंड नारायण वामन तिलकहिक सम्पर्कसँ केशवसुतकेँ कविता रचनाक प्रति अनुराग जाग्रत भेल छल। एहि सम्पर्कक प्रसंग तिलक लिखैत छथि, "केशवसुत तथा हम बड़ घनिष्ट मित्र रही। हुनक काव्य प्रतिभाक विकास कोना कोना भेल से हम अंकित कए सकैत छी। हमरा लोकनि दू-तीन मास संग-संग रहलहुँ,—नागपुरमे 1883 ई०मे, पूनामे 1888 तथा 1889 ई० मे तथा बम्बईमे 1895-96 ई० मे।" पूनामे जखन ओ सब एकत्रित भेल रहथि तखन केशवसुत न्यू इंग्लिश स्कूलमे मेट्रिक परीक्षाक तैयारीमे संलग्न रहथि। तथा बम्बईमे जखन एकत्रित भेलाह तखन ओ मराठी भाषाक ईसाइ मासिक पत्रिका 'ज्ञानोदय' के कार्यालयमे रहथि। तिलक ज्ञानोदयक पुरान रचनाकार रहथि तथा 10 फरवरी 1895 कँ स्वयँ ईसाइ धर्म स्वीकार कए लेने रहथि। केशवसुतक निकट सम्बन्धी लोकनि डेराइत रहथि जे 'ज्ञानोदय' तथा रेवरेंड तिलकक निकट सम्पर्कमे रहलासँ कदाचित्

ओहो ने ईसाइ भए जाथि । केशवसुत बाइबिल पढ़ब पसिन्द करैत रहथि तथा एक बेर अपन छोट भाए सीतारामकेँ कहने रहथिन्ह जे हम ईसाइ धर्म ग्रहण करए चाहैत छी (वि० स० करंदीकर, रत्नाकर, फरवरी 1926 ई०) । केशवसुत तथा तिलक यद्यपि मित्र रहथि परन्तु दूनू गोटाक कविता परस्पर बहुत भिन्न छल । केशवसुत बहुत ओजस्वी छलाह तथा हुनकामे सहसा चमत्कृत भेनिहार प्रतिभा छल किन्तु तिलक अधिक सौम्य तथा ऋजु स्वभावक रहथि । तिलक केशवसुतक एतेक अधिक प्रशंसा करैत छलाह जे ओ केशवसुतक जीवनकालहिमे हुनका पर एक कविता लिखलैन्हि तथा हुनक मृत्युक पश्चात् दू कविता काव्यरत्नावली में (जनवरी 1906) तथा मनोरंजन (फरवरी 1906)मे लिखलैन्हि ।

नागपुरक अल्पकालिक वासमे एक अन्य अभिगम्य समाज-सुधारक वासुदेव बलवन्त पटवर्द्धनक संग केशवसुतक परिचय भेल । 1888 ई० में केशवसुत हुनका पर एक दीर्घ कविता लिखलैन्हि । एहन प्रतीत होइन अछि जे केशवसुत पर पटवर्द्धन क काव्य विषयक धारणाक गम्भीर प्रभाव पड़ल छल । दूनूक विचार प्रगतिशील छल, दूनू एकान्तप्रिय छलाह तथा भीड़भाड़सँ कात रहैत छलाह । पटवर्द्धन पाछाँ आबि डेक्कान वर्नाक्यूलर सोसाइटीक आजीवन सदस्य बनलाह, तथा आगरकरक पश्चात् 'सुधारक' पत्रक सम्पादक सेहो बनलाह । पटवर्द्धन पर रचित कवितामे केशवसुत कहने रहथि—

अन्तरिक्षक ओहि तारागणमे
कविगणकेँ होइछ आत्माक दर्शन
काचवत् देखए जनसाधारण
कविकेँ पाथरहुमे भेटए दर्शन ।

किछु समीक्षक लोकनि एहि पंक्ति सबमे इमर्सनक प्रभाव मानैत छथि । वस्तुतः इमर्सन स्वयं वेदान्तसँ प्रभावित रहथि तथा केशवसुत अप्रत्यक्ष ओ अज्ञात रूपसँ एही 'सर्वव्यापी एकात्मा' सिद्धान्तक प्रतिपादक छलाह ।

1883 ई० मे केशवसुत नागपुर छोड़ि कोंकण स्थित अपन गाम खेड़ आपस चल अएलाह, आओर एकसाल धरि ओही ठाम रहलाह, पश्चात् अग्रिम शिक्षा हेतु पूना गेलाह । न्यू इंग्लिश स्कूलक पुरान कागजपत्रसँ ज्ञात होइत अछि जे 11 जून, 1884 ई० मे केशवसुत एहि स्कूलमे प्रवेश कएने रहथि । पूनामे ओ 1889 ई० धरि रहलाह आओर ओहीठामसँ 24 वर्षक अवस्थामे मेट्रिक पास कएलैन्हि । एतेक विलम्ब एहिकारण लागल रहैन्हि जे ओ दू बेर अनुत्तीर्ण भएगेल रहथि, एक बेर अंग्रेजीमे कम अंक प्राप्त भेलाक कारण अनुत्तीर्ण भेल रहथि । अनुत्तीर्ण होएबाक एकटा कारण इहो छल जे ओ बड़ मद्धिम गतिसँ लिखैत छलाह । एकबेर काव्यचर्चा मे एतेक मग्न भए गेल रहथि जे परीक्षाभवन जाएब सएह बिसरि गेलाह ।

न्यू इंग्लिश स्कूलमे हुनक भेँट हरिनारायण आपटेक संग भेल छल । आपटे

मराठीक प्रसिद्ध उपन्यासकार रहथि, तथा केशवसुतक मृत्युक पश्चात् प्रकाशित एकमात्र काव्यसंग्रहक सम्पादक-प्रकाशक भेल रहथि । आपटे केशवसुतक सहकक्ष मित्र रहवाक संग संग आओरो प्रकारेँ घनिष्ठ रहथि। पूनेमे हुनका गोविन्द वासुदेव कानिटवर नामक स्त्रीशिक्षा समर्थक तथा अंग्रेजी साहित्य प्रेमी कवि-अनुवादकक संग मैत्री भेल । कानिटकरक पत्नी सेहो विदुषी रहथि। कानिटकर द्वारा ऐतिहासिक विषय सब पर रचित दीर्घ कविता सबहिक यथा 'अकबर' तथा 'कृष्णाकुमारी' इत्यादिक प्रशंसा न्यायमूर्त्ति महादेव गोविन्द राणडे कएने रहथि। ओ कविता सब स्कॉट सदृश अंग्रेजी लेखकक शैली पर लिखित छल। कानिटकरकेँ श्रीमती हाइमेन्स एलिजावेथ वैरेट ब्राउनिंग तथा तोरुदत्तक कविता प्रिय छल, ओ टामस मूर, टामस हूड, वायरन, वर्न्स, कीट्सक गीत तथा जॉन स्टुआर्ट मिलक सबजुगेशन ऑफ वीमेन (नारीक दासता)क अनुवाद करने रहथि। मासिक 'मनोरञ्जन' ओ 'निबन्धचन्द्रिका, मे कानिटकर दम्पती, आपटे तथा केशवसुत नियमितरूपसँ कविता प्रकाशित करैत छलाह। केशवसुतक तेरह गोट कविता 1888 ई० सँ 1890 ई० क मध्य एहि पत्रमे छपल छल ।

ई एकटा मनोरञ्जक तथ्य थिक जे केशवसुतक काव्यप्रतिभाक विकासमे अंग्रेजी कविताक अध्ययन सहायक भेल छल। किछु गोटेक कथन अछि जे हुनक एहि प्रकारक अध्ययन पालग्रेवक 'गोल्डेन ट्रेजरी' तथा मैकेक 'ए थाउजेंड एण्ड वन जेम्स ऑफ इंग्लिश पोएट्री' धरि सीमित छल। किन्तु ओ आओर अंग्रेजी पोथी अवश्य पढ़ने छल होएताह, यथा मेकमिलनक 'दि वर्क्स ऑफ राल्फ वाल्डो इमर्सन' (रॉल्फ वाल्डो इमर्सनक कृति) किएक तँ ओहिमेसँ अनेको उद्धरण ओ अपन वैयक्तिक पत्र सबमे देने छथि। तथा तोरुदत्तक 'ए शीफ ग्लीण्ड इन दि फ्रेंच फील्ड्स, सेहो पढ़ने छल होएताह। ओ डूमंड, गेटे, पो, लौंगफेलो तथा शेक्सपिअरक किछु सोनेटक नेहो अनुवाद कएने रहथि। ओ अंग्रेजीमे सेहो पद्धबद्ध रचना करबाक प्रयास कएने रहथि। प्रो० मं० वि० राजाध्यक्ष अपन 'पाँच मराठी कवि' नामक ग्रन्थमे लिखने छथि जे केशवसुत संस्कृत काव्यधाराक सेहो नीक जकाँ रसास्वादन कएने रहथि, किन्तु किछु अन्य समीक्षक एहि बातकेँ यथार्थ नहि मानैत छथि, किएक नँ मेट्रिक परीक्षा में हुनका संस्कृतमे नीक अंक प्राप्त नहि भेल छल ।

यद्यपि न्यू इंग्लिश स्कूलमे केशवसुतक अध्यापक लोकनिमे आगरकर तथा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक सदृश प्रसिद्ध शिक्षक लोकनि रहथिन्ह तथापि एहन सन प्रतीत होइत अछि जे हुनका लोकनिक द्वारा पढ़ाओल गेल विषयमे केशवसुतकेँ विशेष रुचि नहि छल। जाहि एक शिक्षकसँ ओ विशेष प्रभावित भेल छलाह से छलाह समाजसुधारक आगरकर। केशवसुत शिक्षणवर्गमे यद्यपि कागज पर निरर्थक रेखा अंकित करैत रहैत छलाह तथा लोकमान्य तिलक सदृश शिक्षक लोकनिक व्यंग्यचित्र बनबैत रहैत छलाह, मुदा ओहि समयक बड़का-बड़का वक्ता लोकनिक

प्रभाव हुनका पर अवश्य पड़ल। पूनामे ताहि समय विहाड़ि बहि रहल छल। 1880 ई० मे चिपलणकर निवन्धमालामे अंग्रेजी शिक्षाप्राप्ति कें 'बाधिक दूध पीअब' कहए लागल रहथि, तिलक 'केसरीक स्तम्भमे गर्जना कए रहल छलाह तथा आगरकर अपन 'सुधारक'मे समाजसुधारक नवयुगक आह्वान कए रहल रहथि। किर्लोस्कर तथा भावे मराठी रंगमंचक निर्माण कए रहल रहथि, हरीनारायण आपटे मराठी कथासाहित्यकें आकार प्रदान कए रहल रहथि। किन्तु केशवसुत लज्जालु स्वभावक रहथि तथा समाजसुधारक ओ राजनीतिज्ञ लोकनिक एहि शोभायात्राक संग चलव हुनका प्रिय नहि छल। ओ कविता रचनहिकें अपन माध्यम बनाए ओहीमे संलग्न रहलाह तथा शैली जकाँ आशा वन्हने रहलाह जे—

हमर मृत विचारकें संसारमे सुखाएल पात जकाँ
पसारि दिअ सगरो जाहिसँ त्वरितहि होएत नवोद्गम
(पश्चिमी हवाक प्रति)

केशवसुतक जीवन पर हुनक दूनू भाएक जे अत्प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ल छल तकर उल्लेख करब एहिठाम आवश्यक अछि। हुनक छोट भाए मोरो केशवदामले (1868-1913) वम्बइ युनिवर्सिटीक ग्रेजुएट रहथि आओर दर्शनशास्त्र तथा इतिहास हुनक अध्ययनक विषय छल; ओ माधव कालेज उज्जैन में 1894 ई० सँ 1907 ई० धरि दर्शनशास्त्रक प्रोफेसर रहथि तथा पश्चात् 1908 ई० मे ओहि कालेजक वन्द भए गेला पर नागरपुर सिटी स्कूलमे पढ़बैत रहलाह। पूनामे एक रेल दुर्घटनामे हुनक आकस्मिक मृत्यु भए गेल। ओ 1911 ई०मे मराठीक प्रथम शास्त्रीय व्याकरणक रचना कएने रहथि जे 900 पृष्ठक एक वृहत् ग्रन्थ अछि, यद्यपि वै० का० राजवाड़े सदृश संस्कृत विद्वान् लोकनि ओहिमे पूर्ण शास्त्रीयता नहि मानल। मोरो केशव 'वर्कक भाषण' सवहिक अनुवाद तथा आगमन एवं निगमन तर्कशास्त्र पर मराठी भाषामे सर्वप्रथम पुस्तक रचना कएलैन्हि। दोसर भाए सीताराम केशव दामले (1878-1927 ई०) पत्रकार, उपन्यासकार तथा देशभक्त रहथिन्ह। ओ ज्ञानप्रकाश तथा राष्ट्रमतक सम्पादकीय विभागमे कार्यरत रहथि तथा मुलशी सत्याग्रहमे सम्मिलित होएबाक कारण हुनका दू वर्षक कारावास दण्ड भेटल छलैन्हि। दामले परिवार प्रतिभाशाली व्यक्ति लोकनिक परिवार छल, किन्तु दुर्भाग्यवश एहि परिवारक सव सदस्य अल्पायु भेलाह। एही कारणसँ केशवसुतक कवितामे करुण रस व्याप्त अछि।

मेट्रिक पास करबाक पश्चात् केशवसुत दरिद्रताक कारण आगाँ नहि पढ़ि सकलाह। ओ 1890 ई० मे नोकरी तकबाक हेतु वम्बइ पहुँचलाह। कोनो उच्च शिक्षाक उपाधि नहि रहबाक कारण नोकरी भेटबामे कठिनता तँ भइए रहल छलैन्हि ताहि सँगहि हुनक स्वाभिमान सेहो असाधारण छल। सामाजिक सत्तामे उच्चपदस्थ अपन पारिवारिक वन्धु—यथा वि० ना० मंडलिक वा अन्यान्य व्यक्ति

लोकनिसँ कोनो सहायता ग्रहण नहि करए चाहैत छलाह। पहिने ओ एकटा मिशन स्कूलमे अध्यापक नियुक्त भेलाह तथा पश्चात् अमेरिकन मिशनक पत्र ज्ञानोदयक कार्यालयमे काज करए लगलाह। तत्पश्चात् दादर न्यू इंग्लिश स्कूलमे अध्यापक बनलाह। आय कम रहबाक कारण कोनो-कोनो समय हुनका अपन आवश्यकताक पूर्त्ति हेतु ट्यूशन सेहो करए पड़ल छलैन्हि। (हुनका अपन जीवनमे बीससँ पचीस रुपैया धरिक मासिक वेतनसँ बेसी कहिओ प्राप्त नहि भेलैन्हि)। कखनहुँ कखनहुँ काज नहि भेटबाक कारण हुनका अपन गाम सेहो आपस चल जाए पड़ैन्हि। हुनक जीवनक एहन अनिश्चित तथा उबड़ुब गति हुनक पिताकेँ नीक नहि लागि रहल छल। पिताक आग्रह रहैन्हिजे केशवसुत एहि प्रकारेँ बाढ़िमे भसिआइल काठ जकाँ नहि रहि कोनो एक स्थान पर जमिकेँ रहथि। तेँ केशवसुत बहुत अनिच्छापूर्वक 1893 ई० मे बम्बइमे स्थान पकड़बाक प्रयास कएलैन्हि। हुनक 'सिंहावलोकन' सदृश आत्मकथापरक कविता सबमे परिवारक एहि आन्तरिक द्वन्द्व सबहिक उल्लेख भेटैत अछि। ओ कल्याणमे 1891 ई० मे एकटा अंग्रेजी स्कूलमे अध्यापन कार्य कएलैन्हि। सैनिक आपूर्त्ति विभागमे किरानीक काज सेहो ओ कएलैन्हि। किन्तु जखन हुनक इच्छाक विपरीत हुनका कराँची स्थानान्तरित कए देल गेल तँ ताहि कारणे ओ त्यागपत्र दए देलैन्हि। ओ तखन तार (टेलिग्राफ) देनाइ सीखए लगलाह। 1893 ई० मे सामन्तवाड़ीमे छओ मासक हेतु ओ शिक्षक बनलाह।

केशवसुत बम्बइमे अध्यापकक रूपमे स्थिर भएकेँ जीवन व्यतीत करबाक हेतु छलाहे मुदा ताही समय हुनका काशिनाथ रघुनाथ मित्र, जनार्दन धोंड़रे भांगले तथा गोविन्द बालकृष्ण कालेलकर, एहि तीन गोट युवक साहित्यकार तथा सम्पादक लोकनिसँ भेँट भए गेलैन्हि। केशवसुत 'विद्यार्थी मित्र' तथा 'मासिक मनोरंजन' (स्थापित 1895 ई०) मे बहुतो रास कविता लिखलैन्हि। मित्र तथा भाँगले— ई दूनू गोटे बंगाली तथा गुजराती भाषा नीक जकाँ जनैत रहथि। भाँगले बंकिम-चन्द्रक उपन्यास तथा गुजरातीक एकटा उपन्यासक अनुवाद कएने रहथि। 1894 ई० मे बंकिमचन्द्रक प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्दमठ' मराठी भाषामे 'आनन्दाश्रम' नामसँ अनूदित भेल। एही उपन्यासमे ओहि समयक प्रसिद्ध राष्ट्रीय गीत 'वन्दे-मातरम्' आदि। केशवसुत अपन कविता 'कविते चे प्रयोजन' (1899) मे धरती-माताक हेतु 'सुजला सुफला विशेषणक जे प्रयोग कएने छथि से एही गीतसँ अनु-प्राणित अछि। बम्बइमे रहबाक अवधिमे ओ 'माधवानुज (डा० काशीनाथ हरी मोडक 1872-1916) तथा किरात तथा श्री गजानन भास्कर वैद्य जे पाछाँ हिन्दू मिशनरी नामसँ प्रसिद्ध भेलाह इत्यादि कविक सम्पर्कमे अएलाह। वैद्यक भाए पेन्सिल द्वारा केवल स्मृतिसँ केशवसुतक एकटा रेखाचित्र बनओने रहथि। केशवसुत प्रार्थनासमाज (महाराष्ट्रमे बंगालक ब्रह्मसमाजक समान पथ), आर्यसमाज, ईसाइ मिसन, इत्यादि स्थानमे व्याख्यान सुनबाक हेतु जाइत रहैत ललाह। किन्तु 1896

ई० मे जखन वम्वइमे प्लेग महामारी पसरिगेल छल, तखन केशवसुत कें वम्वइ त्यागि खानदेश स्थित भड़गाम चल जाए पड़ल। ओ अपन पत्नी तथा पुत्री सवकें चालिसगाँवमे सुरक्षित राखए चाहैत छलाह जाहिठाम हुनक श्वसुर हेडमास्टर रहथिन्ह। श्वसुर हुनका भड़गाँव स्थित एंग्लो वर्नाक्युलर स्कूलमे अध्यापन-पद हेतु आवेदन करवा लेल कइलथिन्ह आओर तखन ओहिठाम हुनका पन्द्रह रुपैया मासिक वेतन पर नियुक्ति सेहो भए गेलैन्हि।

1897 सँ मार्च 1904 ई० धरि केशवसुत खानदेशमे रहलाह जाहिठाम पहिने ओ भड़गामक म्युनिसिपल स्कूलमे सेवारत भेलाह। परन्तु वेतन असन्तोष-जनक छलैन्हि तथा पेन्शनक सेहो कोनो सुविधा नहि छल, तें ओ 1898 ई० मे सरकारी एस० टी० सी० परीक्षामे सम्मिलित भेलाह आओर उत्तीर्ण भेलाह। 1901 ई० मे ओ फैजपुर (खानदेश) मे अंग्रेजी स्कूलक हेडमास्टर नियुक्त भेलाह। ओहिठाम ओ अंग्रेजी पढ़वैत छलाह। दुर्भाग्यवश फैजपुरमे दोसरे वर्ष प्लेग पसरि गेलें स्कूल वन्द भए जएवाक आशंका उत्पन्न भए गेल। एही मध्य अपन स्वतन्त्र स्वभाव तथा मुक्तचिंतनवृत्तिक कारण केशवसुतकें अधिकारी लोकनिक संग मतान्तर भए गेलैन्हि आओर ओ स्थानान्तरण हेतु आवेदन कए देलैन्हि। अप्रैल 1904 मे मराठी अध्यापकक रूपमे हुनका धारवाड़ हाइस्कूलमे स्थानान्तरण भेल।

खानदेशमे 'काव्य रत्नावली' नामक पत्रिकाक सम्पादकक संग हुनका परिचय पात भेलैन्हि। काव्यरत्नावलीमे केवल कविता टा प्रकाशित होइत छल। सम्पादक नारायण नरसिंह फडणीश वड़ काव्यमर्मज्ञ रहथि आओर से केशवसुतक विषयमे लिखने रहथि—"केशवसुत ओहि पाँच कविरत्नमे एक छलाह जनिका पर हमर पत्रिकाकें गर्व छल। हरपले श्रेय (लुप्त आदर्श) हुनक अन्तिम कविता छल जकरा हमरा लोकनि प्रकाशित कएल।...ओ मुक्त विचारक कवि रहथि। हुनक कवितामे विचारक भव्यता तथा उदारता देखि आनन्दमिश्रित आश्चर्य होइत अछि। हुनक स्वभाव वड़ अव्यावहारिक छल, कखनहुँ-कखनहुँ विक्षिप्त जकाँ करए लगैत छलाह। हमरा हुनका संग केवल दू-तीन वेर भेंट भेल छल। किन्तु वार्त्तालापमे ओ वड़ संकोची रहथि।" (काव्य रत्नावली, 1905 ई० क अन्तिम अंक)।

खानदेशमे केशवसुतकें अन्य जाहि विशेष व्यक्तिक संग मैत्री भेल रहौन्हि, से रहथि प्रसिद्ध राष्ट्रवादी कवि 'विनायक' (विनायक जनार्दन करंदीकर, 1972-1909)। वम्वइमे 1891-92 ई० मे हुनका लोकनिक साक्षात्कार भेल छल। केशवसुत हुनका 'महाराष्ट्रक वायरन' कहल करथि। दूनूमे वहुतो रास बातक, विशेषतः सामाजिक अन्याय तथा राजनैतिक दासताक विरुद्ध विद्रोह भावक समानता छल। केशवसुतक जीवनक ई अन्तिम समय अपेक्षाकृत नीकजकाँ व्यतीत भए रहल छल। हुनका अपन सहज अपेक्षित परिवेश तथा पढ़वाक हेतु पर्याप्त पुस्तक भेटैत

रहल । ओ काव्य प्रकृति पर चिन्तन करैत रहैत छलाह तथा गम्भीर विषय सब पर मित्र लोकनिक संग अंग्रेजी भाषामे पत्राचार सेहो करैत रहलाह । हुनक रचनामे आब रहस्यवाद दिशि रुचि देखार होअए लागल छल ।

केशवसुत अप्रैल 1904 ई० सँ डेढ़वर्ष धरि धारवाड़मे रहलाह । एहिठाम ओ जीवनक असारता तथा तकर अनिवार्य करुण अन्त पर विचार करैत रहलाह। हुनका प्रायः अपन अकालमृत्युक पूर्वाभास भए गेल छल । 25 मई, 1905 कें चिपलूणमे लिखित अपन अन्तिम कविताक विषयमे चर्चा करैत ओ एकटा मित्रकें लिखने रहथि—" 'मनोरंजन' क गताङ्कमे हमर रचना पढ़ि हमर मनःस्थितिक पता लगाए सकैत छी । हृदय खण्डित भए गेल अछि, किन्तु ओह, तकर औषध कहाँ अछि ?"

वास्तवमे हुनका कोनो उपाय नहि छलैन्हि । अपन रुग्ण पित्ती हरी सदाशिव दामलेकें देखवाक हेतु ओ अपन पत्नी तथा पुत्रीक संग अक्टूवरक अन्तमे हुवली गेलाह । चारि-पाँच दिन धरि ओहिठाम रहि ओ धारवाड़ घुरवा लेल रहथि । परन्तु 7 नवम्बरकें हुनका प्लेग पकड़ि लेलक आओर मृत्यु भए गेलैन्हि । तकर आठ दिनक पश्चात् हुनक पत्नी सेहो ओही रोगसँ कालकवलित भए गेलीहि। दाहसँस्कार पित्ती कएलथिन्ह तथा नीनू पुत्रीकें कोंकण पठाए देल गेल जाहिमे एक पुत्रीक मृत्यु थोड़वे दिनक पश्चात् नए गेलैन्हि । अन्य दूनूक विवाह-दान भेलैन्हि आओर तखन हुनका लोकनिक जीवन कोन प्रकारक रहल ताहि विषयमे विशेष पता नहि अछि ।

इएह थिक केशवसुतक कारुण्यपूर्ण अल्पजीवनक 39 वर्ष । हुनका सम्बन्धमे सर्वाधिक उपयुक्त टिप्पणी हुनकहि शब्दमे होएत । कवि सम्मेलन सबहिक विषयमे ओ अपन एकटा मित्रकें व्यक्तिगत पत्रमे लिखने रहथि जे—

"वार्षिक कविसम्मेलनक विषयमे विचार करवाक प्रसंग,—व्यवहार कुशल व्यक्ति लोकनि व्यावहारिक उद्देश्यसँ समय-समय पर एकत्रित होइत रहैत छथि । (मुदा) स्वप्नदर्शी कवि लोकनिकें पृथके रहि नीरवताक स्वर्गिकस्वर श्रवण करैत रहबाक चाही तथा काव्यभारतीक अनुकम्पा प्राप्त भेला पर ओहि दिव्यस्वरकें अपन ठेठ भाषामे सम्प्रेषित करवाक प्रयास करवाक चाही । यदाकदा दू-तीन समान संवेदनशील आत्मा सम्मिलित होइत रहथु···किन्तु वेसी गोटाक सम्मिलित भेलें आस्वाद विरस भए जाएत ।"

ओहिसमयक मराठी कविताक विषयमे ओ अपन एक अन्य मित्रकें लिखने रहथि—

"कृपया हुनका कहिऔन्ह जे···हम हुनका प्रार्थना करैत छिऐन्हि जे ओ एक दीर्घ कविता लिखथि, तथा केवल छोट कविता लिखबामे लागल रहि समय नष्ट नहि करथि । विगत एक शताब्दीमे कोनो दीर्घ ओ महत्त्वपूर्ण कविता नहि लिखल

गेल अछि, आओर ई काज तँ आओरो'''सदृश प्रतिभाशाली व्यक्तिक थिकैन्हि जे ओ लोकनि एहि कलङ्कक मार्जन करथि। हमरा दुःख अछि जे हम अल्पप्राण छी आओर अपन वामन रूपकेँ ऊपर उठएवाक कोनो टा लक्षण अपनामे नहि देखैत छी। तेँ हमरा अपना प्रति घृणा आछि आओर हमरा ओ लोकनि केओ प्रिय नहि छथि जे केवल छोट-छोट वस्तुक हेतु प्रयत्न करैत रहैत छथि।"

(ई पत्रांश केशवसुत द्वारा अंग्रेजी भाषामे लिखित व्यक्तिगत पत्र सबहिक थिक।)

प्रकृति

सेनेका कहि गेल छथि जे "समस्त कला प्रकृतिक अनुकरण थिक" आओर तकर ठीक विपरीत ऑस्कर वाइल्ड कहने रहथि जे "प्रकृति कलाक अनुकरण करैत अछि।" ई आवश्यक नहि अछि जे एहि दुनू कथनसँ हमरा लोकनि सब केओ सहमत रही। केशवसुतक कवितामे प्रकृतिक प्रसंग एकटा औदास्यपूर्ण, अविचल आसक्ति भेटैत अछि। एहन सन लगैत अछि जेना प्रकृतिमे कवि अपन अभिलाषाक प्रतिध्वनि पबैत छथि, कवि ओकरा अपन शरणस्थल मानैत होथि, हुनक एकाकी तथा औदास्यपूर्ण समयक आवरण जेना ओएह रहैन्हि। वि० स० खाण्डेकर हुनक 'गाम' तथा 'नैकृत्यक हवा' सदृश कविता सबहिक उल्लेख कएने छथि जाहिमे कोंकण जनपदक दृश्य सबहिक वर्णन द्वारा गामघरक प्रति कविक आवेश बहुचर्चित भेल अछि। 'गाम'मे केशवसुत लिखने छथि—

"नहि विशाल देवालय ततय
अछि मुदा उच्च पर्वत-राजि
स्तुति सुनबथि निर्झर अविराम
अनुसरथि समीरहु प्रवहमान।"

केशवसुतक केवल दू गोट कविता शुद्ध प्रकृति-वर्णनात्मक-कविता कहल जाए सकैत अछि :—पहिल थिक 'वर्षाक प्रति' तथा दोसर थिक 'दीवाली'; जाहि मे प्रथमार्द्ध ऋतुवर्णनात्मक थिक, पर्जन्याव्रत (वर्षाक प्रति) केवल बीस पंक्तिक रचना थिक, परन्तु कालिदासक 'ऋतु-संहार'क स्मरण कराए दैत अछि। ई कविता स्पष्टतः यथार्थवादी वर्णनसँ आरम्भ होइत अछि—

"ग्रीष्म सँ तप्त धरा जेना झड़कि गेल अछि
चरीक आशमे धूसरित नेत्र पशु व्यर्थ बेहाल अछि।
छाहरि वा जल देखितहि विरमए पशुगण
पाजु करए, निसास लिअए पथिकहुगण॥
एहन दशामे आव बहुत दिन बीति गेल हे पावस
आब अहाँ त्वरित आउ, लंका दिशिसँ चल आउ।
अहाँक आगमनक प्रतीक्षामे इनारक बेंग
राति भरि अहाँक नामक निनाद करैत रहैछ॥"

'दिवाली' शीर्षक कवितामे शरत्-सुन्दरीक वर्णनमे प्राचीन कविताक स्पर्श अछि। केशवसुत एहि ऋतुक प्रातःकाल कें गोप, मध्याह्न कें अर्घ्यदाता साधु तथा सायंकाल कें थाकल ठेहिआएल कृषक कहैत छथि। किछु कविता पुष्प तथा टिकुली-फर्तिगीक प्रति सेहो अछि। प्रकृतिक विविध वर्णमय वैभव ओतेक वेसी वर्णित नहि भेल अछि, जतेक वेसी मानवीय अवस्था पर दार्शनिक-मनन करबाक हेतु ओकरा (प्रकृति कें) व्याज बनाओल गेल अछि।

एहन प्रतीत होइत अछि जे केशवसुत इमर्सनक प्रकृति-विषयक निबन्ध पढ़ने रहथि, जाहिमे आरण्यक-कालक प्राचीन ऋषिलोकनि जकाँ ओ कहने छथि—"आरण्यकमे चिरन्तन यौवन तथा उदात्त भावक चिरन्तन निवास अछि। दैवी तत्वक विनाश नहि होइत अछि। जे किछु नीक तत्व अछि से चिरन्तन रूपसँ पुनर्निर्माण करैत रहैत अछि। प्रकृति-सौन्दर्य मनमे पुनः-पुनः उद्भूत होइत रहैत अछि आओर से शुष्क चिन्तनक हेतु नहि, अपितु नवीन सृजनक हेतु। नीरव दृश्य सबमे, विशेषतः सुदूर क्षितिज-रेखामे मनुष्य अपन प्रकृतिक अनुसार सौन्दर्यक अवलोकन करैत रहैत अछि। 'एकसर दूर जाइत रहैत' शीर्षक कवितामे ओ कहैत छथि—

"जीवनक अनेक स्वप्न भंग भेल,
हताशा सेहो बेर-बेर भेल,
तदपि तकर आश राखि चलू अरण्य,
चलू, बढ़ि चलू, एकतारा बजबैत ।।"

केशवसुतकें प्रकृति कहुखन पथनिर्देशक आओर कहुखन वन्य-सहचरी जकाँ प्रतीत होइत रहलैन्हि, रक्तरंजित नखदन्तयुक्त कदापि नहि प्रतीत भेलैन्हि। अपन 'वातचक्र' शीर्षक कवितामे ओ लिखने छथि—

"एहि ठाम किएक विरमब
की अछि एतय जे हमरा छेकैत अछि ?
एहन लगैछ जेना हम वृत्तमे नचैत रही,
आ' वातचक्रक चक्रमे भए जाइ विलीन सच्चिदानन्दमे ।।"

अपन जीवनक अन्तिम समयमे लिखित 'लुप्त आदर्श' शीर्षक कवितामे ओ गम्भीर निराशामे छथि, किएक त' प्रकृति सेहो हुनका नीक जकाँ सन्तुष्ट नहि कएल—

"जतए कतहु अछि झरना आ' जंगल,
ततहि हमर मन अछि बसैत ।
किए तँ ततहि हमरा होइछ साक्षात्कार,
जीवनक आदर्शक संग ।।

एहि अरण्य पथ दिशि तेँ आवि अनेक वेरि
मुक्त भावसँ हम करी तकर ध्यान ।
यद्यपि तकर दर्शनक आभास भेटैत अछि हमरा,
से मुदा क्षणमात्रहिमे भए जाइछ लुप्त ।
तखन एहि अरण्यमे हम रहि जाइ कनैत
तदपि लुप्त आदर्श अछि हमरा दुष्प्राप्य ।।"

केशवसुत एहि नदी सवहिक तटमे चलैत-चलैत ओहि 'परम दिव्य ओ चमत्कार-मय' तत्वक दर्शन करैत छथि । हेजलिट जकाँ ओहो सहसा अनुभव करए लगैत छथि जे "आगाँक ओहि मेधक छोरसँ हम अपन पूर्व जीवनमे डुवकी लगाएव तथा ओहीमे क्रीड़ा करव ।"

प्रकृतिक प्रति केशवसुतक एहि रोमाण्टिक प्रवृत्तिक सम्यक् मूल्यांकन करवाक हेतु पृष्ठभूमिक रूपमे ओहि परम्परागत मराठी कविता दिशि दृष्टिपात करव आवश्यक अछि जे संस्कृत काव्यरीति पर आधारित रहि प्रकृतिकेँ उद्दीपन विभावक रूपमे वर्णित कयने छल । हुनक समकालिक कवि लोकनिमे रेवरेण्ड तिलक 'फूल ओ वच्चाक कवि' कहल जाइत छलाह, वालकवि ठोंवरे त' 'प्रकृतिक पुत्र' हि छलाह । केशवसुतक पश्चात्क कवितामे मनुष्य ओ प्रकृतिक मध्य तीव्र संघर्षक भाव भेटए लगैत अछि, परवर्त्ती रोमाण्टिक कवि लोकनिमे जेना गडकरी वा 'वी' मे ताहि प्रकारक भाव भेटैत अछि । सर्वप्रथम केशवसुतहि प्रकृतिकेँ वैयक्तिक अनुभूतिक स्तर पर दर्शन कएलैन्हि, हुनका हेतु प्रकृति एकटा दैवी ओ अतीन्द्रिय-सत्व प्रतीत भेल । एहि प्रकारक प्रकृति-वर्णन पुरातन रीतिक ऋतुवर्णन अथवा प्रातः वा सायंकालक रूढ़ नामोल्लेख युक्त वर्णन वैशद्यसँ भिन्न छल । केशवसुतक 'सन्ध्या'मे एक भिन्न चित्र भेटैत अछि—

"सन्ध्या : सागर पर अस्तगत रवि
जनिक सुन्दर मुख चूमत लहरि ।
अवनि पर झरल कुसुम जनि वनि जाइछ धूलि
तहिना इहो वृत्त विलीन होएत वृत्तहिमे ।।

× × ×

प्रेमीजन देथि सन्ध्याकेँ हुलसि आशीर्वाद
अहाँसँ ईर्ष्या नहि हमरा
आवेशक नहि अभाव हमरा
छोड़ि घर दूर हम आएल छी
आओर की ताहीसँ साँझमे एते उदास छी ?
आओर की भए सकैत छलहुँ हम ?"

'प्रकृति ईश्वर कृत काव्य थिक' अथवा 'प्रकृतिमे ईश्वरक निवास अछि' इत्यादि कल्पना केशवसुतकेँ प्रिय नहि छल। हुनक भाग्य कहिओ नहि चमकल छल आओर तेँ ओ निर्मम—विधाताक कल्पना कए सकैत छलाह। केशवसुतक घनिष्ट मित्र 'किरात' लिखने छथि "ई प्रतीत नहि होइत अछि जे ईश्वरमे हुनका आस्था छल। एहन बुझि पड़ैत अछि जे एम्हर आबि एक-दू वर्षसँ हुनक विचार कनेक-मनेक परिवर्त्तित भेल अछि; यथा—ओ अपन चिट्ठीक ऊपरमे 'श्रीराम' लिखए लगलाह अछि। एकबेर ओ कहने रहथि जे "हमरा एकटा रहस्य-मय मधुर अन्तःसंगीत श्रुतिगोचर होइत अछि। एहन संगीत, जकर उल्लेख अनेक भक्त लोकनि कएने छथि तथा शेक्सपियर सेहो 'पेरिल्कीज'मे तकर उल्लेख कएने छथि। ताहि पर हम कहने रहिऐन्हि—"आब अहाँकेँ जँ एहन अन्तर्नाद श्रुति-गोचर होअए लागल अछि त' अहूँ आब तुकाराम सदृश साधु भए आएब आओर पूर्णरूपसँ आस्तिक भए जाएब।" केशवसुत उत्तर देने रहथिन्ह—"एखन जेना हमरा कविताक संग उत्कट प्रेम अछि, तहिना भरिसक कोनो दिन परमात्माक संग सेहो प्रेम भए जाए।"

केशवसुतक कवितासँ प्रतीत होइत अछि जे सर्वव्यापी परमात्माक ऐक्यमे विश्वास रखनिहार व्यक्ति जकाँ इहो एहि दुविधामे ओझराएल रहथि जे "यदि परमात्मा प्रकृतिरूप छथि तथा सर्वप्रेममय छथि, तखन जीवनमे एतेक दुःख किएक अछि?" शंकराचार्यक सिद्धान्तकेँ मानि जगत एवं प्रकृतिकेँ माया कहलासँ तथा कवि पो जकाँ ई कहैत रहलहुसँ जे—

"जे किछु दृश्य वा आभासित अछि।
से सपनाक अन्तर्गत सपना अछि॥"

...एहि समस्याक पूर्ण समाधान नहि होइत अछि। यदि कवि नास्तिक छथि, तखन ओमूर्तिभंजक आओर विद्रोही भए जाइत छथि आओर केशवसुत सेहो किछु अंश धरि सएह रहथि। किन्तु ओहि युगक ओ समयक कवि 'वनवाणी' (जंगलक ध्वनि)क अस्पष्टो ध्वनि नहि कए सकैत छलाह, हुनकामे जतबा सहृदयता तथा कलात्मक संवेदनशीलता छल, तकर फलस्वरूप ओ एकदम सर्वसंशयवादी वा अनास्थामय नहि बनि सकलाह। ओं एक प्रकारक अस्पष्ट श्रद्धासँ संलग्न रहलाह —आओर प्रायः टैगोर (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) जकाँ ओहो 'वनवाणी'क ध्वनि सुनने रहथि, जाहिमे अनन्तक प्रति मौन निमन्त्रण छल।

प्रेम

केशवसुतक शृंगारिक कविताक प्रसंग श्री ए॰ आर॰ देशपाण्डे नागपुरसँ प्रसारित आकाशवाणीक एकटा मराठी वार्त्तामे, जे पश्चात् 'तरुण भारत'मे प्रकाशित भेल अछि; निम्नलिखित उद्‌गार व्यक्त कएने छथि—

"हमरा जनैत केशवसुत मराठी भाषामे शृंगारिक कविता-रचनाक अग्रदूत थिकाह। यद्यपि हिनक कविता आपाततः अंग्रेजी कवितासँ बहुत सादृश्य रखैत अछि, किन्तु इहो मानल जाए सकैत अछि जे कालिदास तथा भवभूतिक शृंगारिक काव्य-परम्परासँ मराठी कविताक सम्बन्ध-सूत्र पुनः इएह जोड़लन्हि। मध्यवर्त्ती अनेको शताब्दीक अन्तरालमे भारतवर्षक सामाजिक रूपरेखा पूर्ण रूपसँ अवसन्न भए गेल छल। युवक-युवतीक मध्य स्वाभाविक ओ निष्कलुष प्रेम तथा ताहि प्रकारक पारस्परिक आकर्षणक परिणामस्वरूप हुनका लोकनिमे प्रेम-विवाह होएबाक घटना भारतीय समाजमे पूर्णतः अज्ञात छल आओर साहित्यमे ताहि प्रकारक वर्णन वर्जित छल। किन्तु व्यक्तिक स्वतन्त्रता तथा महत्ताक पुनः स्थापना भेलाक पश्चात् सामाजिक-बन्धन सेहो छिन्न-भिन्न होअए लागल। एहि प्रकारक काव्यात्मक अनुभूतिक प्रति केशवसुतक कविता 'उपासूक्त' थिक···।"

'प्रियाक ध्यान' शीर्षक हिनक प्रथम शृंगारिक कवितामे स्वानुभूति पर आश्रित अन्तर्मुखी प्रवृत्ति भेटैत अछि। दाम्पत्य प्रेमक प्रसंग एहि कवितामे जाहि प्रकारक भाव व्यक्त कएल गेल अछि, से परम्पराक अनुकूल नहि अछि। प्रेमक आदर्श तथा सारतत्वक दिग्दर्शन हिनक रचित 'जहाजक रेलिंग लग ठाढ़ि भए समुद्रक दर्शन करैत तरुणीक प्रति' शीर्षक कवितामे कराओल गेल अछि। एहि कवितामे केशवसुत लिखने छथि—

"ताहि ठाम अपना लोकनिक
प्रेम यदि अछि प्रबल
तँ प्रिये अहाँ रहब नारी
हम रहब अहाँक प्रेमी
अथवा हमहि होएब नारी
आओर अहाँ होएब हमर प्रेमी
आओर रहब प्रेम बन्धनमे
अहाँ आओर हम परस्पर आबद्ध।"

केशवसुतक दृष्टिमे दाम्पत्य-प्रम तथा आदर्श-प्रेम समान रूपेँ सूक्ष्म ओ दिव्य अछि। सहचर द्वारा पूछल गेला पर जे 'की हमरा लोकनि अग्रसर होएब?' कविक उत्तर होइत अछि जे—

पूछल सहचर—की अहाँ अति आसक्त छी ?
हम कहल, 'अपनहि काँ पूछि लिअ।'
ओ पूछल—'कविता की अहाँक अवरोध करैछ ?
नहि नहि, प्रेम करैछ मुग्ध हमरा,
ई विचलित नहि करैत अछि।"

'प्रेम तथा अहाँ' शीर्षक एक अन्य कवितामे केशवसुत स्वीकार कएने छथि जे "हम प्रेम तथा अहाँक अतिरेक्त आओर कोनो वस्तुक प्रसंग नहि सोचि सकैत छी।" तथा 'प्रणय-कथन' शीर्षक कवितामे हुनका अवसादपूर्ण अनुभूति होइत छैन्हि जे—

"जड़ हाथक मर्यादित कृतिमे
जड़ातीत तत्वक अन्तः करणक
प्राप्ति कोना होएत सम्भव ?"

केशवसुतक प्रेम-कवितामे एक रहस्यमयी अन्तर्धारा अछि, जकर परिणाम-स्वरूप ओहिमे एकटा असाधारण आकर्षण आबि गेल अछि। वॉडलेयरक कविता जकाँ इहो कल्पना-लोकमे घुरिआइत रहैत अछि, यद्यपि एहिमे कीट्सक ऐन्द्रिक बिम्ब-प्रधानता अथवा वायरनक रागात्मक वासना नहि अछि। ए० आर० देशपाण्डे केशवसुतक रहस्यवादकेँ रोमाण्टिक-नव्य-रहस्यवाद कहल अछि, किएक त' ई रूढ़ 'अदृश्य ओ अज्ञेयक स्पर्श'सँ भिन्न अछि। आचार्य एस० जे० भागवत हिनका दार्शनिक कवि कहल अछि जे, "जीवनक विषयमे गम्भीर चिन्तन कएकेँ जीवनानुभवक परीक्षा करबाक साहस कएने छथि।"

केशवसुतक कविता-रचनाक एक तृतीयांश प्रेमक विभिन्न छटावर्णनसँ सम्बद्ध अछि। पूर्वहि कहल गेल अछि जे एहि प्रकारक प्रेम बहुधा अप्राकृत अछि। चुम्बन वा रति-वर्णनक प्रसंगक अभावे जकाँ अछि। संस्कृत काव्यमे शृंगारिकता ओतप्रोत छल तथा केशवसुतक पूर्ववर्त्ती मराठी लोककाव्य 'लावणी'मे उत्कट शृंगार भरल छल; मुदा केशवसुतक कवितामे अकस्मात् भाव-परिवर्त्तन आबि गेल अछि, एहिमे पूर्णतः अमूर्त्त प्रेमक वर्णन परिलक्षित होइत अछि, एकर इन्द्रधनुषी छटा करुणाक मेँही आवरणक तरसँ प्रस्फुटित होइत अछि। प्रतीत होइत अछि जेना केशवसुत अपन प्रेम कवितामे ई तर्क कए रहल होथि जे प्रेम दिव्य ओ स्वर्गिक थिक। एहि प्रेमक बीजवपन हमरा लोकनिक हृदयमे होइत अछि, ई जखन पुष्पित होइत अछि, तखन एकर माला प्रियतमाक हेतु रहैत अछि। प्रेमहिसँ प्रेमक उदय होइत अछि, प्रेम हाट-बाजारमे भेटनिहार वस्तु नहि थिक, ने ई कोनो पण्य पदार्थ थिक। एहि प्रकारेँ केशवसुत एहि ठाम अज्ञातरूपमे कबीरक उक्ति प्रतिध्वनित करैत छथि। कबीर एकटा दोहामे कहने छथि—

"प्रेमने वाड़ी उपजे प्रेम न हाट विकाय ।
राजा परजा जेहि रुचे सीस देय ले जाय ।।"

केशवसुतक शब्दमे प्रेम फूलक भाषा थिक । अपन प्रियाक संग हुनका मरुभूमि सेहो प्रिय छैन्हि । 'समृद्धि ओ प्रीति' शीर्षक कवितामे ओ कहने छथि—

"काटि देब काँट सब, वन्य पशु कें मारि देब
प्राचीर गढ़ि हुनि हेतु प्राणहु कें उसरगि देब ।।
लत्ती जकाँ हुनि संग आवद्ध रहि
नरकहु कें स्वर्गमे पलटि देब ।।"

केशवसुतक प्रेम आदर्शीकृत रोमाण्टिक स्वप्न-तत्वसँ निर्मित अछि । हुनक कथन अछि जे हमर प्रेयसी हमरा द्वारा अर्पित पुष्प सवहिक स्मरण कएकें हमरा क्षमादान करतीहि । ओ प्रेमक आन्तरिक मूक्ष्म छटा, मनोवैज्ञानिक उतार-चढ़ावक वर्णन करव पसिन्द करैत छथि । हुनका प्रणयक कल्पना केवल प्रिया तथा उन्मत्त प्रेमी धरि परिमित नहि अछि । हुनक प्रेम-विषयमे शिशु, ओसकण, तारागण, पुरान स्मृति, ग्रामीण वालक, स्तम्भित सन्ध्याक रंग, गुलावक कली तथा लीहंटक कविता 'जेनी हमर चुम्वन कएल' सेहो अछि ।

केशवसुतक प्रेम-कवितामे करुणाक एकटा अन्तःस्रोत प्रवाहित अछि । एहन प्रतीत होइत अछि जेना ओ अपन प्रारम्भिक जीवनक कोनो प्रेमभंगक प्रसंग पुनः पुनः संकेत करैत छथि । हुनक प्रेम कवितामे विरह दुःखक अभिव्यञ्जना निश्चित रूपसँ भेटैत रहैत अछि । केशवसुतक 'उलूक' कविता यद्यपि एडगर एलेन पोक 'गिद्ध' शीर्षक कविता पर आधारित अछि; किन्तु एहिमे ओ किछु अति मार्मिक पंक्ति लिखने छथि, यथा—

"दूर जो, दूर चल जो, हमरा कानए दे ।
हमर हृदय कें शोक मे अधिआइत रहए दे ।
हमर कानमे अपन अवाज नहि पड़ए दे ।
हमर खिन्न मन पर निर्वेदक वोझ नहि दे ।
हमर घाओकें एतेक नहि दुखा ।
दूर जो, तों एहि ठामसँ दूर चल जो ।
घुग्घू 'उहूँ' प्रत्युत्तर दिअए ओ अधम ।
निराशा घेरि लेलक हमरा चारू दिशि ।
जंगलाक सोझसँ टरए नहि कनेको उलूक ।
"घुग्घू घुग्घू वहार पसरि रहल ओकर
भीषण धूत्कार ।"

केशवसुत अपन एकटा दोसर कवितामे 'मयूर सिंहासन' तथा ताजमहलक

तुलना करैत छथि जे दुनु एकहि गोट सम्राटक द्वारा बनबाओल गेल छल। कवि भौतिक वैभवक प्रदर्शनक अपेक्षा प्रेमहिकेँ पसिन्द करैत छथि। मूल सोनेट 13 नवम्बर, 1892 ई०केँ रचित भेल छल, जे निम्नलिखित अछि—

"दू गोट नीक काज कएल ई सम्राट
एकटा बनबओलनि मयूर सिंहासन
जाहि पर बैसि शोभित भेलाह ओ
छओ कोटि रूपैआ लागल ओहिमे
राजागण कर जोड़ि शिर नमाओल हुनिकाँ
सम्राटहिक हाथमे अपन शिर बुझि कंपित रहथि सब।
अपन प्रेयसीक हेतु ओ एकटा स्मृति मन्दिर बनबाओल
गहीर यमुना तट पर तीन कोटि लगाएकेँ।
दस्यु लूटि पड़ाएल ओहि सिंहासनकेँ
अद्भुत ताजमहल मुदा एखनहु धरि ठाढ़े अछि।
मत्त भ्रान्त मानव, तोहर कृतिक एहने होइछ अन्त
कतबो धूप दीप देखाबह स्वार्थी प्रकृतिक समक्ष
मुदा मन राखह जे धूम बनि सबटा होएतह विलीन
एकहु सुरभित धूपवती सँ प्रेमीक लेल नमिकेँ जराबह
तँ तकर परिमल सदा संसारमे पसरि तोरा जुड़ओतह।"

मराठी प्रेमकाव्यक एहू दिशामे केशवसुत अग्रणी छथि। ओ मुक्त छथि, स्पष्ट छथि। ओ नारीक प्रति शारीरिक आकर्षणकेँ सेहो अभिव्यक्ति प्रदान करैत छथि। केशवसुतसँ पूर्वक कवितामे प्रणय-निवेदन अप्रत्यक्ष ओ अलंकृत वा बहुत अधिक आडम्बरपूर्ण ओ नादमय छल। केशवसुत एहू विधामे भावगीतात्मक सुकुमारता निर्मित कएल। हुनक किछु कविता जेना 'प्रियाकेँ दूरसँ स्मरण करैत करैत' आधुनिक मराठी कविताक प्रारम्भिक प्रेम-कविता सबमे सर्वश्रेष्ठ अछि।

सामाजिक विद्रोह

27 मार्च, 1966 ई०केँ मुम्बई मराठी-ग्रन्थ-संग्रहालयमे भाषण दैत श्रीमती चारुशीला गुप्त वाजल रहथि जे केशवसुत जँ केवल 'नव सिपाही', 'तुरही' तथा 'लवालव' एहि तीन गोट कविताक अतिरिक्त आओर किछु नहि लिखने रहितथि त' ततबहुसँ अमर भए गेल रहितथि। हुनक कथनानुसार ई कविता सब नवीन

महाराष्ट्रक हेतु तीन संहिता थिक। ई तीनू कविता, जकर अनुवाद एहि ग्रन्थक अन्तमे देल गेल अछि; बड़ सशक्त अछि तथा एहन विद्रोह-भावनाक उच्छ्वास थिक जाहिसँ मराठी कविता तावत् धरि अपरिचित छल। एहिसँ इहो ज्ञात होइत अछि जे केशवसुत एक एहन चिर जागरूक मानवतावादी छलाह जे सब प्रकारक जीर्ण रूढ़ि तथा विझाएल परम्परासँ लड़ए चाहैत छलाह। मनुष्य तथा मनुष्यक बीच जाति, वर्ण वा समुदायक कारण कोनो प्रकारक भेद-भाव हुनका अभीष्ट नहि छल। हुनक उपलब्धि सबहिक महताकेँ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे देखब उचित थिक।

केशवसुतक जन्मसँ एक दशक पूर्व सन् 1857 ई०मे ब्रिटिश-सत्ताक विरुद्ध प्रथम विद्रोह धाराप्रवाह रूपमे घटित भेल छल। अब भारतवासी ब्रिटिश साम्राज्यकेँ दैवी वरदान बुझब छोड़ि देने छलाह। सम्पूर्ण महाराष्ट्रमे अनेक आन्दोलन आरम्भ भए गेल छल, जाहिसँ जनसाधारणमे दासताक विरुद्ध चेतना जाग्रत भए रहल छल। जखन केशवसुत पढ़बाक हेतु पूना गेलाह त' ओहिठामक वातावरणमे 'हमर देश, हमर धर्म, हमर भाषा' एहन नारा व्याप्त छल। हुनक देशप्रेम सम्बन्धी कविता सब मुख्य रूपेँ सन् 1890 ई०क पूर्वहि रचित भेल अछि, तकर पश्चात् केशवसुतक जीवन वा रचनामे राजनीतिसँ कोनो साक्षात् सम्पर्क दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। ओहि समय महाराष्ट्रक कवि तथा विचारक लोकनि इतिहास-वर्णन द्वारा उदीप्त राष्ट्रीयताक भाव प्रचारित कए रहल रहथि, ओ लोकनि अधिकांशतः गौरवमय अतीतक अखण्ड-अभिनन्दन-गान करैत रहथि। केशवसुत एहि प्रकारक पुनर्जागरणपरक आत्मसम्भ्रमसँ अनासक्त रहलाह। सामाजिक असमानताक प्रसंगमे ओ दुख तथा आघातक अनुभव कए रहल छलाह तथा तकरा प्रत्येक मूल्य पर समाप्त करबाक हेतु अपन स्वर मुखरित कएलैन्हि।

हुनका क्रान्तिक कवि मानल जाए अथवा उत्क्रान्तिक, एहि प्रसंग मराठी आलोचक लोकनिमे मतान्तर अछि। किछु गोटे मानैत छथि जे ओ अपन समयसँ बहुत बेसी आगाँ बढ़ल छलाह, किछु गोटे मानैत छथि जे ओ एकटा क्रान्तिकारी प्रक्रियाक अंशमात्र छलाह, ओकर निर्माता नहि (पटवर्द्धन) तथा अन्य आलोचक हुनका केवल एकटा सुधारक मानैत छथि। अपन कवितामे यद्यपि ओ स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व-भावनाक समर्थन कएने छथि; तथापि हुनका राजनीतिक-कवि नहि कहल जाए सकैत अछि। अपन परिवेशक प्रति हुनक प्रतिक्रिया अस्वीकृतिक शैलीमे छल। हुनका ई बात नीक जकाँ अवगत छल जे कविक रूपमे समाज पर हुनक प्रभाव तिर्यक् तथा दुर्बल छलैन्हि।

हुनक सामाजिक विद्रोह ओहि दूषित शिक्षा-पद्धतिक आलोचनासँ आरम्भ भेल, जाहिमे 'बच्चाकेँ छड़ीसँ पीटि पीटिकेँ पढ़ेबामे लगाओल जाए' एहि मान्यतामे विश्वास कएल जाइत छल। अप्रिल, 1889 ई०मे रचित एकटा सोनेटमे जकर

शीर्षक छल 'बच्चाकेँ मारनिहार गुरुजी', ओ अपन सात्विक क्रोध व्यक्त करैत छथि—

"हे क्रूर, कोन मूर्ख अहाँकेँ गुरुपद प्रदान कएल ?
किएक नहि भेलहुँ अहाँ कसाइ ? नीक छल यदि सएह भेल रहितहुँ ।
निर्मम भए एहि बच्चाकेँ मारि आ गंजन किएक करैं छिऐक ?
कोन पाप कएलक अछि ई से तँ कहू ।।"

केशवसुतकेँ पाठशाला तथा पाठशालाक गुरुजी लोकनिक प्रसंग बड़ कटु अनुभव छल तथा तकरहि प्रतिक्रियामे ओ लिखने छथि ।

हुनका भारतवर्षक तात्कालिक स्थितिक ध्यान सतत बनल रहैत छल । ओ अपन दुःखपूर्ण उच्छ्वास 'एक भारतीयक उद्‌गार' शीर्षक कवितामे सन् 1886ई०मे अभिव्यक्त कएने छथि—

"जेना ई सूर्य उगै छथि
कि तहिना हमरहु गौरव-सूर्य एक दिन नहि उगल रहथि
किन्तु पश्चिम दिशि रमण करबा लेल
ओ चल गेलाह
ह्रासक ई निविड़रजनी हमरा सतबए पहुँचि गेल
हे लता, एहि सुन्दर सुमन सबहिक की उपयोग अछि
हमर जीवनमे ।
हे विहग, मधुर गीत गाबी अहाँ मुदा—
किएक ने आह्लाद पाबी ।
दासताक कारण हमर नेत्रक ज्योति लुप्त भए गेल अछि
दासताक कारण हमर कान सेहो बधिर भए गेल अछि ।।"

एहि दीर्घ कवितामे एही प्रकारेँ लिखैत-लिखैत अन्तमे लिखने छथि जे—

"हे ईश्वर, एहि परवशताक निशा समाप्त भए
स्वतन्त्रताक द्युमणि कखन उदित होएत ?
कखन हम पिजड़ासँ छूटब हे ईश्वर
देश हमर पुनि राष्ट्रत्व पाओत कखन ?

कविकेँ एहि बातक कनेको आभास नहि भए सकल रहैन्हि जे हुनक स्वप्न एकहत्तरि वर्षक पश्चात् सत्य भए जाएत ।

दोसर महत्वपूर्ण कविता ग्राम्यजीवनक महत्व तथा सरलताक प्रशंसामे रचित अछि । ओहिमे निर्धन लोकक जीवनमे सन्तोषक महत्व निरूपित कएल गेल अछि तथा पाश्चात्य आडम्बरक मनमोहक आकर्षणक विरुद्ध सचेत कराओल गेल अछि ।

सन् 1887 ई०मे रचित 'एकटा ग्राम' शीर्षक एहि दीर्घ कविताक किछु पंक्ति निम्नलिखित अछि—

"नहि भव्य भवन भेटए एतय,
अछि एतय कुटी निराडम्वर ।
मुदा भवनमे अछि व्याधिक वास,
नहि वसए कुटीमे व्याधि ।।
व्याधिक मन अछि पैंध,
चाही ओकरा सोफा गद्दी ।
कुटीमे अछि कोरा कम्वल,
जे नहि भावए ओकरा ।।
एहि पल्लीक कुटी सवमे,
भलमानुस गृहस्थ वसैछ ।
खेत पथारहिमे श्रम कए कएकेँ,
सोझ सुलभ जीवन वितवैछ ।।
रहवा लेल भेटए जँ एहन कुटी हमरा,
भेटए जँ श्रम करवा लेल खेत एक ।
केओ हमरा दरिद्र नहि कहि सकिते,
केओ हमरा अल्पविद्य नहि कहि सकिते ।
स्वर्गहुक सुख हम दितहुँ नकारि,
कीर्तिक नहि करितहुँ कनेको अभिलाष ।।
कीर्ति थिक केवल एक पाँखि,
पक्षीकेँ पहिने मारि, तकर पाँखिसँ मुकुट सजाओल जाइछ ।
भने अन्तमे सेहो धूसरित भए जाइछ ।।
केओ अतिथि यदि, घर पर आवथि
'अहिँक थिक ई घर', हुनका से कहिऐन्हि ।
दूरस्थ देशक कथा सुनि हुनिसँ
मन भए जाइछ आश्चर्य-विभोर
'संसार अछि की एहन अथाह
अछि एहिमे की एहन ठाटवाट
से बाजि हुनका दिशि चकित भए ताकी हम
मुदा स्वस्थितिक संसार सँ तुलना नहि करी हम
स्वर्गलोकमे छैक बहुत सम्पत्ति,
एहि ठाम जकर रंच लेशहु नहि
त की दुःख सँ हा-हा करैत
ई धरती भ्रमण छोड़ि दैछ ?"

एहि कवितामे उजड़ल ग्रामक (दि डेजर्ट्रेड भिलेज)क चमत्कार तथा उपोद्-घातक (दि प्रिल्यूडक) सदृश सरलता अछि, संगहि अपन एकरा विशेष भव्य उदात्तता सेहो अछि।

श्री दिनकर केशव वेडेकर आधुनिक युगमे महाराष्ट्रक सांस्कृतिक जागरणक दार्शनिक पृष्ठभूमिक विषयमे लिखने छथि जे "रानडे तथा आगरकरमे एक महत्व-पूर्ण अन्तर छल। आगरकरमे प्रकृतिक प्रति एक एहन उत्कट भावुकतापूर्ण निष्ठा छल, जकर अनुभूति कोनहुं प्राचीन वा नवीन दार्शनिकके नहि भेल छलि तथा से रानडे केँ सेहो अज्ञात छल। एहन उत्कट तथा उन्मादकारी प्रकृति-प्रेम जे केशव-सुतक कवितामे भेटैत अछि तथा पश्चात् आओरो उत्कट रूप में बालकवि (1889 1918)मे पाओल जाइत अछि, से महाराष्ट्रक दार्शनिक अनुसन्धानक दृष्टिसँ बड़ महत्वपूर्ण विषय थिक। यदि आगरकरक निबन्ध 'प्रकृति-निरीक्षण'क ध्यानपूर्वक अध्ययन कएल जाय 'त' ओहिमे अनेक तथ्य दृष्टिगोचर होएत।" (महाराष्ट्र-जीवन, सम्पादक-गं० वा० सरदार, पृष्ठ-60)

एक प्रकारेँ ई ओहि आह्वानक आरम्भ छल जे पश्चात् गाँधीजीक 'गाम दिशि घुरि चलू'क आह्वान द्वारा मुखरित भेल छल, तथा जे पम्चात् रवोन्द्रनाथ ठाकुरक 'माटीर डाक'मे तथा हालीक 'उकता गया हूँ यारव दुनियाँ की शोरिशों से, सदृश कवितामे नीक जकां व्यक्त भेल अछि। प्रथम दशाब्दक कवि लोकनि एक एहन नीड़क अनुसन्धानमे छलाह, जाहिमे हुनका आध्यात्मिक सन्तोष तथा सान्त्वना भेटि सकय। एक प्रकारसँ एकरा रोमांटिक पलायनवाद कहल जाए सकैत अछि। परन्तु एल्ड्स हक्सले अपन 'साध्य ओ साधन'। (एण्ड्स एण्ड मीन्स) ग्रन्थमे कहने छथि जे "प्रत्येक पलायन एक प्रकारक उपलब्धि सेहो थिक।"

तथापि केशवसुत नागरीकरणक सब प्रकारक दबाव तथा सामन्ती व्यवस्थाक टुटबाक स्थिति दिशि सावधान छलाह। हुनक 'तुरही' शीर्षक कविताक दू खिष्ठा आलेखक गम्भीर अध्ययन सँ एकटा बड़ महत्वपूर्ण तथ्य उद्घाटित होइत अछि। आरम्भिक आलेखमे स्त्रीशिक्षाक पक्षमे, वालविवाहक विरोधमे, विधवाक केशव-पनक विरोधमे, विधवा-विवाह तथा अस्पृश्यता निवारणक प्रसंगमे लिखल गेल अछि। किन्तु दोसर संशोधित आलेखमे ओहि, सव विषयक स्पष्ट उल्लेख छोड़ि देने छथि, यद्यपि कविताक स्वर तैओ उपदेशात्मक तथा नीतिप्रधान अछि; परन्तु ओकरा सामाजिक सुधारपरक पद्यात्मक निबन्ध नहि कहल जाए सकैत अछि। बी० एस० पण्डित लिखने छथि जे "केशवसुतक 'श्रमिक' लाल कामरेड नहि छल। 1889 ई० मे जखन ओ एहि कविताक रचना कएने रहथि, तखन कोनहुँ भारत निवासीकेँ कार्लमार्क्सक नाम परिचित नहि छल।" एवं प्रकारेँ सामाजिक-विद्रोह-सम्बन्धी केशवसुतक कवितामे कविक मनक ई मौलिक प्रेरणा अभिव्यक्त भेल अछि जे देशक सर्वांगीण विकास होअए। सौन्दर्यबोध तथा काव्यात्मक मूल्यक

प्रति हुनक निष्ठा सर्वप्रमुख छल, किन्तु एकटा नागरिक तथा सामान्यजनक दायित्व निर्वाह करैत अन्यायक प्रति संघर्ष करवाक कर्त्तव्य सँ ओ विचलित नहि भेलाह। हुनका एहि बातक हेतु श्रेय प्रदान कएल जएबाक चाही जे अन्धश्रद्धा तथा संकीर्ण राष्ट्रवादक भावनासँ ओ आक्रान्त नहि छलाह। राष्ट्रवादी कविता लिखवाक प्रलोभनमे ओ नहि पड़लाह, यद्यपि ताहि सँ हुनका सुलभतापूर्वक बड़ वेसी लोकप्रियता प्राप्त भए सकैत छलैन्हि तथा उच्चतर सामाजिक सत्ता सेहो उपलब्ध होइतैन्हि। किन्तु ओ अपन काव्यभारतीक प्रति सत्यनिष्ठाक निर्वाह करैत छलाह।

अनुवाद

केशवसुत पाश्चात्य-साहित्यक गीत, संवोधन कविता (ओड) तथा सो्ेट, आदि काव्यविधाक जे अनुकरण कएलैन्हि, से त' करवे कएलैन्हि; तकर अतिरिक्त हुनक कवितामे अंग्रेजीक कतिपय वाग्धारा तथा सूक्तिक शाब्दिक अनुवाद सेहो भेटैत अछि, जेना—'मुखाकृति पढ़व' ओ 'मनुष्य मनुष्यकें की सँ की वनाए देलक।' हुनक कुल 132 कवितामे 25 कविता अनुवाद थिक, जाहिमे चारिटा' संस्कृतसँ तथा शेष अंग्रेजी सँ अनूदित अछि।

संस्कृतसँ अनूदित कवितामे केशवसुतक कोनो मौलिकता वा विशेष प्रतिभा प्रदर्शित नहि अछि। ओ सव पद्यानुवाद वौद्धिक व्यायाम जकाँ लगैत अछि। 'रघुवंश'क सातम सर्गक पाँचम सँ वारहम श्लोकक अनुवाद द्वारा ओ अपन काव्य-साधना आरम्भ कएने रहथि। ताहि सँ पूर्वहि गणेश शास्त्री लेले सम्पूर्ण 'रघुवंश'क पद्यवद्ध अनुवाद कए चुकल रहथि। केशवसुत अपन अनुवादमे कतहु-कतहु मूल अर्थछटा अभिव्यक्त करबामे विफल रहलाह अछि तथा कतहु-कतहु अपना दिशि सँ सेहो किछु-किछु जोड़ि देने छथि। हुनक अन्य अनुवाद भारविक 'किरातार्जुनीयम्' काव्यक प्रथम सर्गक 26 गोट श्लोकक अछि। प्रथम अनुवादक अपेक्षा ई किछु वेसी नीक भेल अछि। ओ संस्कृतक दू सुभाषितक सेहो अनुवाद कएलैन्हि जाहिमे एकटा हास्यरसक श्लोक अछि।

अंग्रेजीक अनुवादमे छओ गोट सोनेट अछि विलियम ड्रमण्डक 'संसार की एहिना चलैछ ?' तथा 'प्रकृतिक पाठ', श्रीमती एलिजावेथ वैरेट व्राउनिंगक 'कर्म' तथा शेक्सपियरक तीन गोट सो्ेट 'अन्धप्रेम', 'पीतरि पाथर नहि थिक' ओ 'शवपरीक्षा'। अन्य कविता थिक थॉमस हूडक 'मृत्यु शय्या', एडगर एलेन पोक 'स्वप्नमे स्वप्न' इमर्सनक 'क्षमा', विलियम स्कॉटक 'हृजेलडीनक जओक', जॉन लाइलीक

'क्युपिड ओ कैम्पेस्पे' तथा लीहंटक 'रॉदी'। तकर अतिरिक्त अन्य विश्व-भाषाक तीन गोट कविक कविताक, यथा गेटेक 'झाड़ पर एक लघु गुलाब', थिओफिल गोत्रेक 'वर्फ सदृश देत फतिगी' आओर विक्टर ह्यूगोक 'छोटका नेपोलियन'क अंग्रेजी-अनुवादक आधार पर तकरा मराठी भाषामे अनूदित कएलैन्हि। (अन्तिम दुनू फ्रेंच कविता तोरदत्तक अंग्रेजी अनुवाद पर आधारित अछि।)

एकर सवहिक अतिरिक्त तीन गोट दीर्घ कविता अछि जे अनुवाद त' नहि थिक; किन्तु एच० डब्लू लाँगफेलोक 'सीढ़ी पर स्थित पुरान घड़ी', इ० ए० पो० क 'गिद्ध' तथा जॉन डाइड्रेनक 'अलुकजेण्डरक भोज अर्थात् संगीतक शक्ति' एहि तीन गोट अंग्रेजी कविताक आधार पर रचित वा तकर छायानुवाद अछि। मूल कविताक मुख्य कल्पना आओर रचनावन्ध एहि कविता सवमे सुरक्षित अछि, किन्तु परिवेश, छन्द-विन्यास तथा वातावरण पूर्णतः परिवर्तित अछि।

डॉ० माधवराव पटवर्द्धन तथा प्रो० आर० एस० जोग सदृश आलोचकक अनुसार ई अनुवाद सव ने सुन्दर अछि आओर ने उच्चस्तरक अछि। एहि सवसँ मुख्यतः इएह प्रमाणित होइत अछि जे सर्वेश्वरवादजनित आस्था तथा उदारता प्रभृति पाश्चात्य विचारधारा तँ मराठी कविताकेँ प्रभावित कइए रहल छल, ताहि संग-संग रचना-विधामे सेहो ताहि प्रकारक प्रयोग आरम्भ भए गेल छल जे मराठी कवितामे तावत् धरि अज्ञात छल। केशवसुत द्वारा मराठीमे सोनेटक प्रयोग एकटा मनोरंजक अध्येय विषय थिक। मराठीक प्रथम सोनेटक रचना ओ 13 नवम्बर, 1892 ई० मे कएल, जकर शीर्षक छल 'मयूरासन अनी ताजमहल' (मयूरासन ओ ताजमहल)। 13 मई,1893 ई० क 'करमणेक' पत्रिका मे ई प्रकाशित भेल छल। ओहि समय ओकरा मराठीमे चतुर्दशक वा चतुर्दशपदी कहल जाइत छल आओर पश्चात् 'सुनीत' कहल जाए लागल। 'दुर्मुख' नामक एकटा एहने सोनेट सदृश रचना केशवसुत-रचित अछि, जाहिमे चौदह पंक्तिक स्थानमे सोलह पाँती अछि। केशवसुत शेक्सपियर तथा मिल्टन दुनूक सॉनेट रूपक प्रयोग कएल तथा हुनका लोकनिक लयविन्यासकेँ सेहो सुरक्षित राखल। प्रारम्भमे ओ आरम्भिक बारह पंक्तिक हेतु एक छन्द तथा अन्तिम दू पंक्तिक हेतु दोसर छन्दक प्रयोग करैत छलाह। परन्तु पाछाँ आवि संपूर्ण सोनेटमे एकरूपता तथा एकहि छन्दक प्रयोग करए लगलाह।

केशवसुक एहि प्रकारक अनुवाद सँ हुनक मनक उदारता प्रतिभासित होइत अछि। ओ पश्चिमक पदविधा तथा छन्द-विन्यास स्वीकार कए तकरा अपनएबा लेल ओ अपन भाषाक अनुरूप बनेबा लेल उद्यत रहथि। सोनेट जखन एकबेर मराठी छन्द-पद्धति मे परिगृहीत कए लेल गेल, तखन ओ ओहि भाषामे बराबरि रचित होइत रहल। केशवसुतक पश्चात् अनेको कवि सोनेटक रचना कएलैन्हि तथा किछु गोटे तँ सोनेट-सरणिमे कथाकाव्यक रचना-सेहो कएलैन्हि। पश्चिमक

काव्यरूप यथा-ओड वा सोनेट वा स्काइलार्क सदृश उत्प्रेक्षाक दीर्घमालिका आदिकेँ लोकप्रिय बनेबाक हेतु केशवसुतहि केँ श्रेय प्रदान कएल जयबाक चाही, ओ वास्तवमे युगप्रवर्त्तक छलाह। जे काज ओ प्रेम आओर सओख सँ आरम्भ कएलैन्हि सएह पश्चात् आबि अनुकरणीय बनि गेल, फैशनक रूपमे तथा यदाकदा एकटा प्रवृत्तिक रूपमे ग्रहण कएल जाए लागल।

नवीन प्रयोग

कवि तावत् धरि महान नहि मानल जाइत छथि, यावत् धरि ओ भाषा प्रयोग अथवा छन्द रचना अथवा सम्प्रेषणक अन्य-अन्य विधानक प्रसंग कोनो सफल प्रयोग नहि करैत छथि। प्रो० जोग केशवसुतक रचना-विषयक प्रयोग पर एकटा सम्पूर्ण अध्याय लिखने छथि। हुनक कथनानुसार केशवसुत अक्षर-छन्दक अपेक्षा मात्रिक छन्द बेसीं पसिन्द करैत छलाह। ओ दू अथवा चारि पंक्तिक पद्यरचनाक प्राचीन परम्परा केँ त्यागि पाँच, छओ वा सात पंक्तिक पद्यरचना कएलैन्हि। एकहि श्लोक मे ओपैघ आओर छोट पंक्ति सेहो लिखलैन्हि। हिन्दी भाषाक दोहा छन्दक प्रयोग मराठी मे मध्ययुगीय कवि मोरोपन्त तथा एक अन्य कविक अतिरिक्त केओ नहि कएने रहथि, मुदा केशवसुत तकरा पुनः प्रयोग मे अनलैन्हि। ओ मुक्त-छन्द सदृश रचना सेहो कएलैन्हि। किन्तु अमित्राक्षर छन्दक रचना ओ कदापि नहि कएलैन्हि।

केशवसुत सँ पूर्व कोनो-कोनो छन्द परम्परागत रूपेँ किछु विशेष रसक परिपाक हेतु सुनिश्चित रूपेँ प्रतिबद्ध भए गेल छल। केशवसुत एहि रूढ़िकेँ तोड़ल तथा पूर्व मे जे छन्द सब भक्ति अथवा धार्मिक रहस्यवादी कविता मे प्रयुक्त होइत छल, तकरा सबकेँ यथार्थवादी सामाजिक विद्रोहक हेतु प्रयोगमे अनलैन्हि। ओ संस्कृत छन्द सबहिक सेहो स्वतन्त्रतापूर्वक उपयोग कएलैन्हि। कतिपय वृत्तक प्रयोग जाति जकाँ कएलैन्हि। अर्थात् परम्परागत वार्णिक साँचा सँ आसक्त नहि रहि मात्राक आधार पर शब्दक लघु-गुरु मूल्यवत्ताक प्रयोग कएलैन्हि। अपन किछु गीत रचना मे ओ गीतक सुनिश्चित मात्रा विधानक अतिक्रमण कए जानि-बूझि केँ गीतक ध्रुव-पद ओ टेक केँ दोहरोअने छथि, अथवा कोनो-कोनो छन्द-पंक्ति केँ रसानुकूल बनएबाक हेतु लम्बा कए देने छथि। ओ अन्त्यानुप्रासक प्रयोग सेहो कएलैन्हि, हिनक रचित 'तुरही', 'उलूक', 'झपूर्झा' इत्यादि कविता में तीन-तीन पंक्तिक पश्चात् एक एहन पैघ पंक्ति, जकर तुक भिन्न प्रकारक अछि, नीक जकाँ प्रयुक्त भेल अछि। ओ एक चरण आओरो बढ़ि आधुनिक अंग्रेजी कवि लोकनिक द्वारा प्रयुक्त एहन तुक-बन्दीक सेहो प्रयोग कएलैन्हि, जकरा पूर्वकाल मे 'स्त्रैण' मानल जाइत छल तथा

'शिग' कें 'फुंक'क संग अथवा 'हास्य'कें 'मानस'क संग तुक मिलएबा मे ओ संकीच नहि कएलैन्हि। एहि प्रकारक तुकवन्दी मे ओ व्यंजनक अपेक्षा स्वरक ध्वनि-रूप पर वेसी ध्यान रखैत छलाह। दू-दू पाँतिक परम्परित प्रास-युक्ततांक स्थान मे ओ फारसी रीतिक 'अ-ब, अ-ब' (ए.बी—ए.बी) सदृश दू-दू पाँतीक योजनाक प्रयोग कएलैन्हि।

संक्षेप मे केशवसुत जाहि प्रकारक काव्य-रूपक प्रयोग करबा दिशि सचेतन भावें प्रवृत्त भेल रहथि से केवल पाश्चात्य रीतिक अन्धानुकरण करबाक हेतु नहि, अपितु हुनका ई अनुभव भेल रहैन्हि जे परम्परागत छन्दशास्त्रक बन्धन मुक्त-काव्याभिव्यंजना मे बाधक भए रहल छल। एवं प्रकारें मराठी काव्य मे ओ एकटा नवीन परम्पराक सूत्रपात कएलैन्हि तथा हुनक पश्चात् बहुतो कवि दीर्घ-सम्बोधन-गीत (ओड) तथा भावगीतक रचना ओही रीति सँ लिखलैन्हि, गजल सदृश दू-दू पंक्तियुक्त रचनामे सम-विषम-प्रास-प्रयोग एकटा फैशन भए गेल तथा पश्चात् रवि-किरण-मण्डलक कवि लोकनि तकर प्रयोग कएलैन्हि।

माधवराव पटवर्द्धन केशवसुतक आलोचना करैत कहने छथि जे "ओ शब्द-योजना कें अत्यधिक महत्व देनिहार कवि छलाह।" एकरा हुनक प्रशंसा सेहो मानल जाए सकैत अछि। एही चमत्कार मे कविक जादू निहित अछि, आओर एही कारणे कविता अननुवाद्य कहल जाइत अछि। केशवसुतक किछु रचना मुख्यत: शब्दसंयोजनहिक चमत्कार थिक, ओहि, शब्द सवहिक मन्थन द्वारा बासि ओ ख्यात अर्थ कें वहार आनए, चाहैत छथि। ओहि शब्द सवमे ओ नवीन अर्थवत्ता आनए चाहै छलाह। एहि दृष्टि सँ ओ एक विशिष्ट प्रयोगवेत्ता छलाह।

समालोचनात्मक मूल्यांकन

केशवसुत अति भावुक तथा गम्भीर कवि रहथि, हुनकामे परिहासक भावनाक प्राय: अभाव छल, यद्यपि अन्य व्यक्तिक परिहासक आस्वादन करबाक क्षमता हुनका मे अवश्य छल। उदाहरणार्थ ओ ब्वाइलो नामक फ्रेंचकविक किछु पंक्तिक अनुवाद कएने छथि—

"ई संसार मूर्खसँ भरल अछि
आ'जे नहि मूर्खक दर्शन चाहथि।
से स्वयं घरहिमे वन्द रहथु,
संगहि अपन चश्मा सेहो फोड़ि लेथु॥"

एहि कविक प्रति राष्ट्रवाणीजे (मार्च-अप्रैल, 1966, पृष्ठ 354 मे) प्रकाशित अपन आदरांजलिमे प्रो० एस० के० क्षीरसागर लिखने छथि जे "केशवसुत वास्तवमे महाराष्ट्रीय लोकक पूजाक विषय बदलि देलैन्हि। सामान्य मनुष्य पहिने पंढ़रपुरक विठोबाक हेतु आतुर रहैत छल अथवा दिवंगत महान व्यक्ति लोकनिक हेतु अथवा पुरान दुःखक हेतु कनैत रहैत छल। प्राचीन कवि की तँ राम अथवा कृष्णक विषयमे रचना करैत चलाह अथवा ईश्वरक हेतु अपन सत्य वा असत्य निष्ठा व्यक्त करैत रहैत छलाह। सामान्य व्यक्तिक दैनन्दिन जीवन केँ काव्यक विषय नहि मानल जाइत छल। किछु कवि पाश्चात्य कवि लोकनिक अनुकरणमे ताहि प्रकारक कविता लिखबाक यत्न कएलैन्हि, किन्तु से नीरस ओ प्राणहीन छल; ओहि सबमे स्वाभाविकता कम तथा कृत्रिमता बेसी छल आओर केशवसुत प्रथम कवि भेलाह जनिक भावना स्पष्ट, विविधतापूर्ण तथा स्वाभाविक-काव्यचमत्कारपूर्ण छल।"

एम० टी० पटवर्द्धन सदृश किछु आलोचक केशवसुत पर विकृति, असामान्यता कृत्रिमता, अप्रामाणिकता तथा दूरान्वयदोषपूर्ण अलंकार—योजनाक आरोप लगओने छथि। ई बात सत्य अछि जे हुनक आरम्भिक कविता किंचित अपरिपक्व अछि, आओर तेँ ओहि सबमे 'धाख जमएबाक' अस्वाभाविक आसक्ति भेटैत अछि। किंतु हुनक समस्त कृतित्वक विषयमे से बात सत्य नहि अछि। एहि प्रकारक वैयक्तिक-आक्षेप पूर्ण-उपयुक्त नहि अछि जे केशवसुत केँ बेसी अध्ययन नहि रहैन्हि अथवा ओ सदा एक अध्यापक बनल रहलाह। श्री ताटकेक आक्षेपक विषयमे सेहो इएह बात कहल जाए सकैत अछि जखन ओ कहैत छथि जे "केशवसुत पाठक लोकनिमे 'आत्म-विस्मृति' उत्पन्न नहि करैत छथि।" एहि प्रकारक आलोचना बड़ व्यक्तिनिष्ठ अछि। अथवा ई कहब जे ओ अपन मराकी रचना में अंग्रेजी वाग्धाराक बहुत प्रयोग कएने छथि अथवा नव-नव शब्द सब गढ़ने छथि अथवा ओ निराशावादी छलाह—एहि सब प्रकारक आरोप हुनक समस्त कृतित्वक प्रसंग सार्थक नहि अछि। प्रो० आर० एस० जोग अपन पुस्तक 'केशवसुत'क अन्तिम अध्याय में एहि प्रकारक आलोचक लोकनिक आरोपक खण्डन विस्तारपूर्वक कएने छथि तथा युक्तिपूर्वक प्रमाणित कए देने छथि जे एहि प्रकारक बहुतो आलोचना पूर्वाग्रहयुक्त तथा असंगत अछि।

केशवसुतक प्रसंग कोनहु समालोचना तावत् धरि पूर्ण नहि कहाओत, यावत् धरि हुनक रचनामे अभिव्यक्त अनन्तक प्रति हुनक रूचि तथा हुनक रहस्यवादानुप्राणित 'आर्त्ति'क उल्लेख नहि कएल जाए। ओ यद्यपि अज्ञेयतावादी रहथि, यथा हुनक कवितामे देवी-देवताक साक्षात् उल्लेख कदापि नहि अछि, तथापि हुनक रचनामे एकटा गम्भीर अध्यात्मिक एषणा व्याप्त अछि; निस्सन्देह से ब्रह्मसमाज वा प्रार्थनासमाजक प्रभावक कारणसँ अछि। ताहि प्रकारक प्रभाव मराठी-कविताक हेतु एकटा नवीन

वस्तु छल। केशवसुत एहि नवीन मानवतावादक दर्शनकेँ काव्यरूप प्रदान कए-लैन्हि जाहिमे बुद्धक दयाभावक संग-संग समतावादी एकात्मक व्यवस्थाक समन्वय कएल गेल अछि। कविता आव धर्म वा राजसत्ता दिशि केन्द्रित नहि रहि स्थानीय वा तात्कालिक धरातल पर स्थित भए गेल छल। तथापि ध्रुव आदर्शक दिशामे हिनक कविताक यान प्रतिवद्ध छल, ई दुःखमय संसारमे स्थित रहिओकेँ कोनो सुदूर अज्ञातक प्रति निष्ठा व्यक्त करैत रहलाह आओर एही कारणे केशवसुतक कविता एतेक महत्वपूर्ण ओ व्यापक भए गेल अछि।

केशवसुतक दोसर मनोहर गुण थिक हिनक वालसुलभ ऋजुता। जतय-जतय ओ वच्चा सवहिक, वा ओकरा सवहिक विस्मय-भावक वर्णन कएलेन्हि अछि, ताहि सवमे वड़ स्फूर्तिदायक विम्व चित्रित अछि। एहन विषय नहि छल जे हुनका चारू दिसि वढ़ल जाइत हिंसाक तथा चारू दिसि सँ पूंजीभूत होइत कारागृहक छायाक आभास नहि छल, किन्तु ओ निराश नहि छलाह। हुनक सौन्दर्यभावना सुदृढ़ तथा स्थायी अछि, ओ अनावश्यक रूप सँ प्रेम केँ मरण अथवा दया केँ क्रूरताक विरोध मे नहि देखाओल। ओ एक एहन कवि छलाह जे नीचाँमे हरित धरती ओ ऊपरमे नील आकाशक प्रति प्रेम रखैत छलाह आओर ताहि सँ वेसी किछुओ कामना नहि छलैन्हि। ओ अपन वैयक्तिक दरिद्रता वा दुर्भाग्य पर आक्रोश नहि करैत रहैत छलाह, मुदा आनेक दुःख देखि वेसी चिन्तित छलाह।

एहि ठाम हम स्वर्गीया कुसुमावती देशपाण्डेक एकटा आओरो उद्धरण केँ उल्लिखित करवाक लोभक संवरण नहि कए सकैत छी—"केशवसुत काव्यसर्जनाक समस्या सवहिक विषयमे मनन करैत रहैत छलाह। ओ स्वयं अपन काव्यात्मक मनोदशाक चढ़ाव-उतार आदिक निरीक्षण करैत रहैत छलाह, शब्दक अभिव्यंजना-शक्तिक लाघव देखि अथवा ग्राम्य ओ जुगुप्सा-व्यंजक प्रयोगक कारण शब्दक विजड़ीकरण देखि खिन्न रहैत छलाह। ओ कविताक प्रयोजन पर तथा काव्यभारती केँ प्रसन्न रखवाक रीति पर विचार करैत रहैत छलाह। हुनक कुल 132 गोट कवितामे 20 गोट कविता ताही प्रकारक विषय पर अछि। आधुनिक मराठी काव्य मे ओ प्रथम कवि छलाह जे एहि प्रकारक समस्या पर विचार कएलैन्हि तथा तकरा काव्यात्मक अभिव्यंजना प्रदान कएलैन्हि। ओ छन्द-रचना तथा काव्यक आकृति-वन्धक प्रयोग करवामे सेहो अग्रणी रहथि। ओ छोट-पैध विविध आकारक पंक्ति प्रयोग कए केँ एकहि संग विविध प्रकारक छन्दक उपयोग कएलैन्हि। चारि पंक्तिक श्लोक-रचनाक परम्पराक त्याग कए केँ कतिपय नवीन प्रणालीक छन्द रचनाक कल्पना कएलैन्हि—। केशवसुतक समस्त रचना एकटा क्षीणकाय पुस्तकक रूपमे अछि, किन्तु ताहि पर आलोचना-प्रत्यालोचना तथा वाद-विवादमे अनेक ग्रन्थ रचित भए चुकल अछि। केशवसुतक कविताक एक वृहत् संस्करण सेहो एहि प्रकारेँ प्रस्तुत कएल जाए सकैत अछि। रजवाड़े तथा रहालकर सदृश समालोचक हिनक

रचनाक समालोचना वड़ सहानुभूति तथा बुद्धिमत्तापूर्वक कएने छथि। ताहि संगहि किछु एहनो समालोचक छथि जे व्युत्पत्ति ओ कलात्मकताक दृष्टि सँ हुनका हेय मानने छथि। किछु अन्य आलोचक हुनका अत्यन्त आत्मकेन्द्रित, विषादपूर्ण ओ अर्द्धभावुकतापूर्ण मानने छथि। किन्तु केशवसुतक कृतित्शक आन्तरिक गुण पुनः-पुनः उद्भासित होइत रहल अछि। हुनक सर्वोत्तम कृतित्वक क्षमता, ओकर वास्तविक मौलिकता तथा गम्भीर विचारशीलता व्यापक स्तर पर मान्य भए गेल अछि। सब सँ वढ़ि ओ आधुनिक मराठी कविताक जनक मानल गेल छथि। आत्मनिष्ठताक प्रवाह अर्थात् जीवनक प्रति वैयक्तिक प्रतिक्रियाक स्वच्छन्द अभिव्यंजना यथार्थताक उन्मुक्त चित्रण, सामाजिक अप्रमाद एवं रहस्यवादी धारा इत्यादि सब विषय हुनकहि सँ प्रवाहित भेल अछि। आधुनिक मराठी कविताक रूपशिल्प ओ विवक्षा-विषयक क्रान्तिक प्रथम उत्स सम्प्रति केशवसुतहि कें मानल जाइत अछि।

हुनक रचना कोन प्रकारक अछि, तकर आभास करएवाक हेतु हुनक किछु सुप्रसिद्ध कविताक यथासाध्य शाब्दिक अनुवाद प्रस्तुत कएल जाए रहल अछि। मुदा एहि पंक्तिक लेखकक दिशि सँ क्षमायाचना करव आवश्यक अछि, किएक तँ ई अपन अपूर्णताक विषयमे पूर्ण अवगत छथि तथा एहि प्रकारक काव्य-क्षमताक प्रसंग कोनो दावी नहि रखैत छथि। किन्तु एहि वातक आशा नीक जकाँ कएल जाइत अछि जे जाहि व्यक्ति कें केशवसुतक विषयमे साक्षात् परिचय नहि प्राप्त छैन्हि, तनिका लोकनिक हेतु ई अनुवाद 'नहि मामा तँ कन्हा मामा नीक' जकाँ यत्किंचितो उपादेय अवश्य भए सकतैन्हि। अग्रिम पृष्ठ सवमे उल्लिखित वस्तु कें पाठक लोकनि भाषा-कविता वा आधुनिक कविताक रूपमे नहि ग्रहण करथु, अपितु एकरा सवहिक मूल्यांकन एहि दृष्टि सँ करथु जे आइ सँ सात दशक पूर्व अपन जीवनमे शिक्षा वा अन्यान्य सुविधा सब सँ वंचित एक व्यक्ति केवल प्रतिभाक वल सँ कोन प्रकारक रचना कए सकल रहथि। केवल ताहि ऐतिहासिक सन्दर्भ तथा परिप्रेक्ष्यमे एकर अध्ययन करव उचित थिक।

केशवसुतक किछु कविता

नव सिपाही

नव सिपाही थिकहुँ हम
युग नवीन केर
नव शक्तिपुञ्ज हम।
के हमरा बान्हि सकए !
ने ब्राह्मण, ने हिन्दू छी, आ ने आने पन्थक अनुयायी,
छथि ओ पतित, बनाबथि जे संकीर्ण जगत कें।
क्षुधा हमर अतृप्त
टिकड़ी सँ नहि तृप्त
हम ने कूपमण्डूक।
आरि घूर नहि रहए देब
के हमरा बान्हि सकए !
छथि हमरा बन्धु सर्वत्र
निज गृह लक्षित सर्वत्र
हरित धरती चरण तलमे
नील गगन अछि ऊपरमे
छायामे सुन्दर शिशुकुल
आतपमे मुदित हो मुकुल
देखि देखि मन हुलसय।
ओ हमर, हम ओकर
एकहि प्रवाह बहय सबमे
नव सिपाही थिकहुँ हम
युग नवीन केर
नव शक्ति पुञ्ज हम।
के थिका हमर पूज्य ?
अह, अपना हित अपनहि पूज्य।

अपनहिमे देखी निखिल विश्व
तें तँ अछि विश्वे हमर परमपूज्य !
क्षुद्रलोक अहम्मन्य
छोटहु वात लेल ढाहथि अनर्थ
तनिका सँ रही कात ।
छोट पैघक हम भेद न जानी
साधु-असाधुक द्वन्द्व न मानी
दूर निकट केर भाव अलोपित
सब अछि महान, सब साधु, सबहि समीप
आओर छी हम ताहि सबहिमे व्याप्त ।
तिलबामे चाशनी चढ़ए जनु
आत्मचेतना पर जड़लेप
भीतर निर्गुण तिल सगर व्याप्त
ऊपर सिरका अछि सगुण प्राप्त
—कण्टकवत आनक हित बनल किन्तु !
भीतर-बाहरक कलह कोना मेटाए ?
से चिन्ता हमरा नित्य खाए
शान्तिराज्यक एहि उदयकालमे
शान्तिदूत बनि हम आएल छी
हम नवजीवनक शूर सिपाही छी ।।

(8 मार्च 1898)

अछोप बालकक प्रथम प्रश्न

अछोप निर्धनक शिशुगण
पथतटमे छल क्रीड़ामग्न
दूरसँ आबि एक विप्र
दमसल सुधमति शिशुगणकाँ ।
"रौ महराक पूत, पड़ा एतयसँ
खेला रहल छेँ तोँ किएक एतय ?
विप्रक पथ छेकि रहल छेँ एतय ?"

शिशुगण लंक लए पड़ाएल
मुदा ठाढ़हि एक रहि गेल ।
छड़ी उसाहि गरजथि विप्र तखन—
रे गदहा ? अपन छाह किए लगबै छें
पड़ा पड़ा नहि तँ पिटबौ तोरा ।"
पड़ा गेल तखन ओहो टेल्ह
सोचैत सोचैत घरहि दिशि गेल
"हमर छाह पड़ि गेलहिसँ
की बिगड़ितैक बाभनकें !"

मातासँ पुछलक घर पहुँचि जखन
तँ बुझबैत बाजलि जननी ओकरा
"हमरा सब छी छोट लोक
आ' ओ सब बड़ पैघलोक
कातहि रही हुनका सबसँ
तखनहि रहब सवनीक ।"

मुदा की ज्ञात नहि ओकरा ई जे
शोषण ओ पापहि कए कएकें
केओ बनल अछि पैघ लोक ।

(3 सेप्टेम्बर 1888)

मूर्तिभञ्जक

मूरुत कें झट फोड़ू
दौड़िकें ओकरा तोड़ू
लूटि लिअ द्रव्य ओकर
आरो काजे की ओकर ।
हम धरती पर रगड़ब नहि नाक
हम शैलनिवासी, स्नेह संस्कारक नहि काज ।
बुझौअलि एकटा पूछए डाइनि
नहि बुझला पर लेतह गीड़ि

तकर फांससँ बचल रही से नीक
सतत रहूतेँ समधान ।
मूर्तिकेँ फोड़ि फाड़ि
पुनः हम देब जोड़ि
मुदा नहि हम बेचब ओकरा
जे बेचए से थिक अनजनुआँ
ओएह असल चोर, हम नहि चोर ।

(अन्तिम कविता)

श्रमिकक भुखमरी

दिनकर गेला अस्ताचल पर
पश्चिम दिशा सोहाओन भेल
हँसीखेलमे अछि सब मग्न
हमहि किए छी तदपि उदास ?
भरि दिन बैसले रहलहुँ आइ
काज अढ़ओलक केओ ने आइ
पेटक खातिर करी हम बोनि
मुदा एको नहि पाओल पाइ ।।
सुन्दर सुन्दर भवन जे देखी
खटल ताहिमे हमरे बाप
ततहि धनिक छथि नाचगानरत
हमरा सतबए भूखक ताप ।।
हम नहि द्वेषी हुनक भाग्यकेर
सुखी अपन सुखले रोटी सँ
कठिन श्रमेमे जीवन अर्पित
दैव ! तदपि हम मरी भूखसँ ।।
समदर्शी कहबी अहँ हे प्रभु
तदपि निर्धन पर किए लोचन वक्र ?
अनका जँ दै छी षट्रस ग्रास
तँ राखी हमरा किएक एना उपास ?

'बच्चा लेल लोलमे चारा लेने
खगदल खोंता दिशि जा रहले
अहुंक बाप छथि आवि रहल
नीकनिकुत अहुँ हियभरि खाएब' ।।
कहि कहि इएह घरनी हमर
शिशुकेँ छथि परतारि रहलि
एहि घरनी ओ बच्चाकेँ हम
कोना निठोहर देखबै जाए ?
गुमसुम रही छगुन्तामे हम
कोन परि मुह देखेबै घर जाए ?
किएक जन्म लेल हम धरती पर
गर्भहि मुइने होइतए नीक !

(जनवरी 1889)

लवालब

चषक दिऔक भरि लबालब
फेन बुलबुलाए दिऔक
पान करितहिँ बदलैत देखी
क्षण-क्षणमे रंग एहि सृष्टिक ।।
बड़बड़ाइ सतत, से भाग्यमे विधि लिखिदेल ।
मद्यप कहाए हम, उपहास जगक सहि लेल ।।
जिह्वा-बन्धनकेँ कर शिथिल ई उत्कट पेय,
दिवि आ वसुधाकेँ द्रवित करए, संग मिलबय ।।
भए तखन मगन मन
जे भावए करू से ध्यान
जे रुचए करू से गान ।
शब्द तकर सुनि कुपित होथि रूढ़िक दास
दिऔक भरि चषक लबालब
फेन बुलबुलाए दिऔक ।

वैदिक ऋृपिक सोमरस-मन्थनक अवशेष
करी याचना हम पिपासित तकरहि लेल
उचित-अनुचितक विवेचन सब थिक व्यर्थ
दुरवस्था हमरा लेलक घेरि, पीविकेँ रही हम मत्त ।।
कल्पनाक नाव चढ़ि गगन-पयोनिधि पार करब हम,
दीन-हीन धरती पर उडुगन-रत्न बरसाएब हम।
देवगण जँ रोकताह बाट
तँ करबैन्हि हुनका प्रतिरोध
पग नहि पाछाँ करब तिलहु भरि।
मनुजहि द्वारा देवगणक सृष्टि, बुझओ तँ लोक।
दिऔक भरि चषक लवालब, फेन बुलबुलाए दिऔक।।
छन्दक लौह शलाका सुनझाओल विधि हमरा
उधेसब जगकेँ हम जनमानस पर टेकि तकरा।।
ध्वजा क्रान्तिक हम फहराएब, क्रान्ति-क्रान्ति कए देब।।
जगमे खण्ड-पखण्ड अनीतिक हम कए देब।
'हर हर महादेव' रवसँ भेल दिगन्त व्याप्त
'जे सुतला से मुइला' ध्वनि अछि श्रवणमे व्याप्त।
उठू उठू होउ सन्नघ
मारू वा, मरू, करू संघर्ष
सत्यक 'उदयोऽस्तु' करू।
छन्दबन्ध उच्छृंखल हमर, चकित विश्वक करू मथन
दिऔक भरि चषक लवालब
फेन बुलबुलाए दिऔक।।

(23 मई, 1896)

कतए जाए रहल छी ?

कतए जाए रहल छी ?
"चीनी किनब;
फलाँकेँ पूत जनमलै
तँ ततए चीनी आवश्यक हेतै,
बान्धवमे परसल जेतै ।।"

कतए जाए रहल छी ?
"लोढ़ब फूल
फल्लाँ ठाम थिकै विवाह
कन्यावरकेँ समर्पित करबा लेल
चाही तेँ फूलक माल्य ।"

कतए जाए रहल छी ?
"आइ हमर थिक घरवास
वस्तु किनए जाइ छी हाट ।"

कतए जाइ छी अपने ?
"बूढ़ाकेँ भए गेल छैन्हि वायु
वैद बजाबए तेँ दौड़ल जाइ ।।"
"दौड़ि लाउ उज्जर वस्त्र
दाहकर्ममे सएह प्रशस्त ।"

देखल एक शव-अरथी जाइत
"कतए जाए रहल छी ?"
"ज्ञात नहि हमरा से अछि ।"
समीरमे ई उधिआएल ध्वनि ।।

12 जून 1889

दुर्मुख

[पाठशालाक कक्षामे एकटा अध्यापक हमरा 'दुर्मुख' कहि देलैन्हि, आओर तखन हमर विचारमे ई बात आएल जे···]

गुरू, सरिपहुँ हमर मुँह अछि कुरूप
भए जाथि सब विरस, देखि हमरा
सरिपहुँ छी हम कुरूप, सब से जनइछ
मुदा अहाँकेँ तहिसँ की क्षति होइछ ?
वा आनन्दे की भेटइत अछि ?

"मुह अछि एकर कुरूप मुदा विधि चाहत लिखत
नव काव्य ई।
हर्षित होइत पढ़ि-पढ़ि जग जकरा ओ जनमन होएत
आन्दोलित।
एहि दुर्मुख केर आननसँ होएबा लेल अछि निस्यन्दित।
सुन्दर सरस वाङ्मय निर्झर प्रवहमान चतुर्दिक।
अहाँ ओ अहँक सन्तान सेहो जकरा पीबि-पीबि अघाएत
ककरो नहि जिज्ञासा रहत जे कविवरक छल आनन केहन!"

(1886 ई०)

प्रकृति ओ कवि

प्रकृति जखन मधुर सरस स्वरमे गावथि
मनुज, हमर सन तेहि सम्मुख की गाबि सकथि?
श्रुतिमधुर कलरव पक्षीक जखन
शुष्क हमर सुरक काज की तखन?
पावस ऋतुमे प्रकृतिक जखन स्रवित नोर
कोन कविक अछि तेहन करुणारस-स्रोत?
निशीथमे जेहन ओ मृदुल उच्छवास लेथि
कवितामे कवि की तेहने उच्छ्वास लेथि?

(अक्टूबर 1886)

किछु स्फुट पंक्ति

विश्वक विस्तार अछि कतबा?
जतबा टा माथ अहँक ततबा।

× × ×

सृष्टिक केन्द्र कतए अछि?
अपन अपन हृदयमे अछि।

नहि छलहुँ अपन बाप हम अपने।
पश्चात्ताप तखन किए करबे?
नोर किए नयनमे आनी?
चिरनिद्रित होएब अछिए भावी!

× × ×

पाठशालामे जे पढ़लहुँ-सिखलहुँ,
एतबा धरि निश्चिते सिखलहुँ।
मध्यम पुरुषहिमे से व्यवहार करी,
प्रथम पुरुषकेँ एकसर छोड़ी।

× × ×

आँखि मूनि दुखक घोंट पीबि लिअ
शेष जँ जाए रहि तँ फेकिदिऔ, फेकि दिऔ।
अहाँकेँ भने से लागए कटु
होएत आनक लेल अमृत सएह॥

(1898 ई०)

आरम्भमे ने छल भूख, ने छल पिआस

आरम्भमे ने छल भूख ने छल पिआस
भोजन ओ मुख छल आसहिपास।
कामक विषय नहि छल दूर
नर ओ नारीक छल एकहि शरीर।
नहि छल हाथ, ने छल पएर
काजे कोन तकर छल तखन!
स्वर्ग ओ पृथिवी छल सतत संलग्न
छल ने कोनो आधि ने छल व्याधि॥

(1898)

हमके थिकहुँ ?

परिचय किएक पुछै छी हमरा ? ईशक थिकहुँ वत्स ।
सकल विश्व मम क्रीड़ास्थल, अनुमति हुनक प्रशस्त ।
सकल विश्व मम विचरणस्थल, ईश्वर शक्तिक स्रोत ।
प्रज्ञा हमर दिशा-कालहुक सीमासँ अछि कात ।
सब आडम्बर हमरा सम्मुख निश्चय होअए व्यर्थ ।
हमरहि करसँ निर्मित अछि सब वस्तुक सौन्दर्य ।
चमत्कारक अछि वास हमर एहि हाथमे ।
छाँटथि केओ केवल भूसा, हम विछइत छी अन्न ।
शून्यमे देवताक साम्राज्य के बसाओल ?
एहि धरतीकेँ सुरलोक समानके बनाबय चाहल ?
हमहि थिकहुँ से जकर कृतिसँ अमृत झहड़य ।
हमहि थिकहुँ जत' प्राप्त अहाँकेँ मंगल-शरण्य ।
हमरा नहि रहलेँ तिमिर पसरत नभमण्डलमे
हमरा नहि रहलेँ प्राणीक नहि किछुओ मोल ।

(29 नवम्बर 1901)

तुरही

चाही हमरा एकटा तुरही
यथाशक्ति फूकब हम तकरा
भेदि देव नभमण्डलकेँ हम
तूर्यनाद तेहन फूकब हम
चाही हमरा तुरही एकटा ।

शून्य गगनमे अछि न्यस्त ।
मूक रूपमे जे ध्वनि सब ।
से सब होएत मुखरित ।
सत्वर हमरहि फूकसँ ।
चाही हमरा तुरही एकटा ।

सारंगी वा सुन्दर सितार
वीणा, वीन वा मृदंग
शहनाइ वा पिपही बंसुली
एकरा सबहिक नहि काज
चाही हमरा तुरही एकटा ।।

जे नरभक्षीक सन्तति अछि,
रूढ़ अन्याय भयानक सतत,
से करत छिन्नभिन्न सबकेँ
समारोहक नहि अछि एखन वेर
पूछि लिअ अपनहि मनसँ फेर
तूर्यनाद सुनि होउ सचेत !

घन घटाटोप अछि पसरल
दिनकर किरण भेल मलान
झड़ि गेल आमक सब मज्जर
रब्बी सबमे लाही लागल ।
तदपि तन्द्रित अछि संसार ।।

"की चमत्कृत कथापुराणक वर्णन सब !
अछि सरिपहुँ सुमधुर मनहारी ।"
"अधुना पसरल अछि सब फूसि ।"
आरोपित करथि जे तुन्दिल एहन एहन बात
'धिक् मूर्ख' इएह उत्तर हमर, सुनि हुनकर बात ।।

गगन पुरातन, किन्तु नवीन तारागण छथि ।
धरती रहथु पुरान किन्तु नवीन हरीतिमा अछि ।
जलनिधि पुरातन किन्तु उपगत नवीन रत्नराशि ।
श्रेयस्कर मान्य अछि सरिपहुँ ई वात ।
जे पुरातन सँ नवीनता अछि उपगत ।।

जीर्ण शीर्णकेँ मरए दिऔक
डाहि दिऔक वा गारि दिऔक
आह्वान भविष्यक सुनू सावधान
मिलाए चलू कान्ह सँ कान्ह ।।

प्राप्त समय थिक भूधर महान
कन्दराक निर्माण करू सुन्दर-सुन्दर।
नाम निज अंकित करू शिलातल पर।
अलसित रहि भेद वढ़ाएव न थिक उचित।
कूदव फानव तोड़व तान।
तखनहि दुनियाँ राखत मान॥

वाट ककर तकैत छी वैसल-वैसल?
बूढ़ पुरातनकेँ जे रुचलन्हि वा फुरलन्हि?
सादर हृदय लिअ तकरा सुनि
मुदा संशय तजि रहिअ अग्रगामि
रहु पुरातन हुक तिलांजलि हेतु प्रस्तुत सतत।

छथि प्रकृति निर्मोह, चाह चिन्ता नहि हुनिका।
के वा कतए, तकर नहि छैन्हि प्रतीक्षा हुनिका।

क्रीड़ारत महाकाल संग
लीला करथि भयाउनि
पर्वत केँ ओ पीसि पीसि
रजसम वनाए सकै छथि।

जुटि जाउ संघर्षमे भए निधोख
गौरवमय गोपुरक निर्माण करू
छिन्न भवनमे करब उचित नहि पूजा पारायण
थिक उचित नहि, शिशुसम कातर भए कानब
थिक उचित नहि जे तजि पौरुष भिक्षा माँगब।
संघशक्तिक पात्रकेँ अछि
छेदि रहल शतशत रूढ़ि
निःस्वार्थ स्नेह अछि प्रतीकार तकर
निज अंशक झट बलिदान करू।

जीवन थिक असिधाराव्रत
शतशत वत्सरक पाप प्रक्षालन हित
अछि अपेक्षित शोणित अहँक
अवीरा अनाथक चीत्कारहु सुनि
करु नहि धैर्य त्याग, नहि बनू स्त्रैण।

नामलोप अछि सम्भावित
तदपि सहिष्णु एते बनल छी ?
तिमिर आवृत्त कर रहल चतुर्दिशि
किन्तु रहू डटल धैरज राखि
आक्रान्त भेला पर आओरो दीप्त बनथि वीर ।।

धर्मक नामे आडम्बर रचि रचि
नीति विवेक अवहेलित होइछ ।
की जड़मतिकेँ बोध न एतबा
जे नीति विवेकधृत रह यावत्
तावत मात्रहि थिर रह धर्मक साख ।।

मिथ्याचारक खण्डन हेतु
करू क्रान्ति हे वीर
समताक ध्वजा फहराए ओ
हो जयघोषित नीति विवेक
तूर्यनाद ई संगहि हो निनादित

नियम अछि मनुजक हेतु निर्मित
मनुज नहि नियमक हेतु निर्मित
नियम बाधक प्रगतिमे यदि
तखन फेकू तकरा तोड़ि
आ' नवशक्तिक करू आह्वान ।।
अनुचित घातक वन्धन सबकेँ
फेकि दिअ झट काटि-काटिकेँ ।।
प्रगतिक ध्वज उत्तोलित कएने
हर-हर ध्वनि गर्जन कएने
आगाँ बढ़ल चलू हे वीर ।
देव असुर संग्राम पुरातन
चलिए रहल अछि एखनहुँ धरि
अधुना असुरगण वहुत बढ़ल अछि
सुरपुर पर ध्वजा फहराबए
सुरगण हितेँ बढ़ू हे वीर ।

28 मार्च 1893
मई 1887

झपूर्झा[1]

(महात्मा लोकनि निरर्थक वस्तु सबसँ सेहो विश्वकल्याणकारी तत्त्व बहार कए लैत छथि। ओहि महात्मा लोकनिक मनःस्थिति दिशि ध्यान राखि एहि गीतकेँ पढ़ला पर एकर अर्थ-दुर्बोध नहि होएत।)

वीतल हर्ष विषाद
हास भेल विलोपित
अश्रु सेहो पलायित
काँटक नोक भोथाएल
वनल मृदुल यथा मखमल
सम्मुख नहि किछु दृश्य
ने कतहु प्रकाशे
ने अछि वा तिमिरे
एहन थितिक की नाम से वाजू
झपूर्झा झपूर्झा झपूर्झा ।।

सुख दुख अनकर जे जन देखथि
तनिका सव दिस ओ की सोचथि ?
उन्मुख कोन काज दिस होइत छथि ?
भने करथु से हमर परिहास
बजवे करब एतय हम निस्त्रास
वड़ सार्थक अछि से, जकर निरर्थक संज्ञा
अवलोकन जनिका एहि तत्त्वक
से जन कहवथि परम बताह
कहु कहु होइछ एकर की अर्थ
झपूर्झा झपूर्झा झपूर्झा ।।

---

1. एहि शीर्षकक शाब्दिक अर्थ किछु नहि अछि। ई एकटा नादानुकरणात्मक शब्द थिक। वालिका लोकनि सामूहिक रूपसँ वृत्ताकारमे स्थित भए केशकेँ नृत्य-गतिसँ आगाँ-पाछाँ, फहरवैत 'जिम्मा' नामक एक प्रकारक खेल खेलाइत छथि, आओर ताहिकाल इएह ध्वनि (झपूर्झा) ध्वनित करैत रहैत छथि।
ई टिप्पणी मूलतः कविक थिक, जकर अनुवाद कएल गेल अछि।

ज्ञानक परिधि परसँ
धैर्य राखि
उत्फाल भल
चिद्घन चपला
चमकए नाचए
मलिनहुकेँ चमकाबय
गबैत अछि से
रहस्यक गीत
तहि गीतक ध्वनि अछि
झपूर्झा, प्रिय, झपूर्झा ।।

खेत विना जोतनहुँ अछि नीक
खेत बहुत अछि
मुदा कृषक एहन के
रहए साधिकार जे
हो हजारमे भरिसक एक
तेँ ततयसँ लेबामे
वनमाला पर
अछि नहि रोक
गबैत रहू मात्र ई मन्त्र
झपूर्झा, प्रिय झपूर्झा ।।

पुरुषक संग मिलि
नित क्रीड़ारत छथि
प्रकृति सदा सुन्दरि ।
स्वर संगम तेहि क्रीड़ा केरि
चिन्हने थिक ज्ञान-उदेश ।
कही ज्ञानकेँ सुन्दर तखनहि
हृदि संप्रेषित हो यदि भाव ।
आव सानुराग गावि प्रेम गीत
झपूर्झा, प्रिय झपूर्झा ।।
सूर्य चन्द्रमा ओ तारागण
नृत्यनिरत छथि सबजन
सब छथि प्रेमभाव परिपूरित;
दिव्यकुसुम तोड़िलाउ

यदि तहँ गमनाभिलाष
निस्संग कनेक वनू
गवैत चलू गवैत चलू
वृत्त वनि नचैत रहू
रहि भावमग्न गवैत रहू
झपूर्झा, प्रिय झपूर्झा ।।

2 जुलाई, 1893

नगर दिशि प्रस्थित एक मित्रक प्रकोष्ठ देखि

हमर मित्रक छल इएह निवास
स्नेहे हुनकर जीवन प्राण
ओ प्रतिवद्ध स्वदेशे हित ले'
(परवशताक) पाश तोड़एमे लीन ।

नहि स्थित केओ विनु अनुबन्ध
सब सम्वद्धे अपन कक्षमे
तेजथि कक्ष तरेगन जौं तौं
हुनकहु द्युति रजकणहिँ समाप्त ।

रहितहुँ चान रविक अनुवर्त्ती
होथि न कदापि दूर अवनिसँ
रहितथि शशि यदि दूर धरासँ
भानुक लग की टिकि सकितथि ओ ?

पत्नीक आसंग तजि मित्र हमर
भेला राष्ट्र-सेवहिमे संलीन
गेला अछि कोनो नगर दोसर
सून पड़ल छैन्ह ई द्वार ।।

चलैत छल एतहि हमरा सबहिक आलाप
अध्ययनक सेहो रहल इएह आलय

मैत्रीक बीज आरोपित एतहि भेल
लतापत्र विकसित तकर भेल
पहर-पहर भरि जागल रहि बैसल हम सब
राष्ट्रकल्याणहुक गप कएल हम सब
श्वास श्वासमे हम सब रहलहुँ एक संग
नोर झोड़ सेहो स्रवित छल एक रंग।

आलापहि एहिना बितए हमरा लोकनिक राति
तखन श्रवणगत उषागान पक्षीक
शीतल सुखद समीरें पुलकित गात
तिमिर हटाए प्रकाश भेल विस्तीर्ण।।

'मुदा अधोगति आ दासत्वक दीर्घ विभावरीक
कखन होएत अवसान' से प्रश्न छल हमरा लोकनिक।
स्वातन्त्र्यक अरुणोदय होएत कखन ?
शुभदिन देखब हमरा लोकनि कखन ?
वा अभागल आँखि करत तकर दर्शन ?
वा ओहि उषाक आवाहनमे हमरहु
उद्वाहु होएब आवश्यक अछि की ?

एहिना अनन्त प्रश्न उत्थित दुहुक मनमे
खिन्न दुहुक मन, मुदा परस्पर ई कहि परबोधिअ
'जतहि चाहिअ ततहि बनत पथ' धैरज नहि तेजिअ।।

कत' अवस्थित एखन अहुँ मित्र ?
कोन अनुष्ठानमे छी लागल ?
राष्ट्र हेतु वलिदान मन्त्र ककरो,
प्रदान करबाजे उद्यत छी की अहाँ ?

एखन देखि बन्द अहाँक द्वार
छी विरह तापसँ हम कातर
पुनर्मिलन होएत अहाँक संग
छल आशा किन्तु, झहड़ए नोर।।
सान्ध्य समयमे देखइत बन्द कमलपुटकें
उद्घाटित करता निजकरसँ मित्र एकरा श्वप्रभातमे
गुनगुनाइत से उदास मनहि जेना भ्रमर निष्क्रमित
हमहुँ तहिना करी निष्क्रमण एतबा कहि हे मित्र !!

(मई, 1887)

परिशिष्ट

केशवसुत विषयक वाङ्मय-सूची[1]

केशवसुतक काव्यकृति

1. केशवसुत यांची कविता : संकलयिता, हरीनारायण आपटे 1917
2. कृष्णजी केशव दाभले यांचा कविता संग्रह व चरित्र : सम्पादक सीताराम केशवदाभले
3. केसवसुतांची कविता (चतुर्थ संस्करण) सम्पादक परशराम चिन्तामणि दाभले 1938
4. केशवसुतांची कविता (पंचम संस्करण) सम्पादक परशराम चिन्तामणि दाभले 1949
5. हरपले श्रेय सम्पादक आर० एस० जोग 1956

केशवसुत सम्बन्धी ग्रन्थ तथा स्फुट लेख

6. केशवसुत आणि त्यांची कविता : व० शं० रहालकर 1919
7. तुतारीची पडसाद एस० भी० वर्त्तक 1916
8. केशवसुत (काव्यदर्शन) आर० एस० जोग 1948
9. केशवसुत चरित्र, चर्चा, अभ्यास, सन्त गडगिल
10. केशवसुत चरित्र विषयक टिप्पणें एस० के० गार्गे रत्नाकर, फरवरी 1926
11. केशवसुत चरित्र विषयक टिप्पणे, एस० के० गार्गे, नवम्बर-दिसम्बर 1930 (रत्नाकर)
12. केशवसुत चरित्र विषयक टिप्पणे एस० के० गार्गे, रत्नाकर, फरवरी 1931
13. केशवसुत-मृत्युलेख—काव्यरत्नावली, दिसम्बर 1905
14. केशवसुत—चरित्र लेखन—काव्यरत्नावती, प्रथम अंक 1917

---

1. महाराष्ट्र सरकारसें प्राप्त तथा गोपाल रामचन्द्र परांजपे द्वारा संकलित।

15. केशवसुत—चरित्र लेखन, सी० के० दाभले 'केशवसुतांची कविता' संस्करण 2, 3, 4
16. केशवसुत चरित्र लेख, श्री० ह० उत्तरदे—यशवन्त, जनवरी 1945
17. केशवसुत आणि विनायक—भी० गु० चिक्केरुर, यशवन्त, अप्रैल 1945
18. मराठी काव्यांची उत्क्रान्ति व केशवसुत, वा० अ० भिडे काव्यचर्चा, पृ० 204 से 219
19. केशवसुत आणि कवीचा व्यापार—प्रो० आर० पी० सवनीस, काव्य-चर्चा, पृ० 220-27
20. केशवसुत—श्री साधुदास, 'काव्यचर्चा', पृ० 228-31
21. केशवसुत व तिलक, प्रो० भी० जी० मायदेव—काव्यचर्चा, पृ० 232-46
22. केशवसुत—जी० टी० मधोलकर, आधुनिक कवि पंचक, पृ० 53-89
23. केशवसुत—जी० टी० मधोलकर—काव्यविचार, पृ० 1-14
24. केशवसुत—गेल्या साठ वर्षातील मराठी कविता—जी० टी० मधोलकर 'अर्वाचीन मराठी साहित्य'
25. केशवसुत—आर० एस० जोग—'अर्वाचीन मराठी काव्य', पृ० 40-57
26. केशवसुत—भी० एस० सरवटे—'मराठी साहित्य समालोचन'—पृ० 213-23
27. केशवसुत—डी० एन० शिखरे—'मराठी चा परिमल'—खण्ड-2, पृ० 525-61
28. केशवसुत—भी० पी० दाण्डेकर—'मराठी साहित्यांची रूपरेखा' उत्तरार्द्ध, पृ० 55-65
29. केशवसुत—ए० एन० देशपाण्डे 'आधुनिक मराठी वाङ्मयांचा इतिहास, भाग-1
30. केशवसुत—बी० एस० पण्डित 'आधुनिक मराठी कविता'—पृ० 148
31. केशवसुत माधवराव पटवर्द्धत 'अर्वाचीन मराठी वाङ्मय सेवक, भाग-1, पृ० 98/175
32. केशवसुतांच्या काव्यदृष्टिनील उत्क्रान्ति देशपाण्डे, पासंग (आलोचनात्मक लेख) कुसमावती
33. नवा शिपाई (रसग्रहण) देशपाण्डे' पासंग (आलोचनात्मक लेख) कुसुमावती
34. आम्ही कोण (रसग्रहण) देशपाण्डे, (आलोचनात्मक लेख) कुसुमावती

35. केशवसुतांची कविता—भी० के० राजवाडे, मनोरंजन, जुलाई, सेप्टेम्बर, अक्टूबर, नवम्बर 1920
36. केशवसुत—एम० भी० राजाध्यक्ष (पंचकवि) सम्पादक—राजाध्यक्ष
37. केशवसुत—डा० पी० डी० गुणे, मनोरंजन, अक्टूबर 1917
38. 'झपूझी आणि म्हातारी' एस० एम० वर्दे—मनोरंजन, 1920
39. केशवसुतांची राष्ट्रीय कविता—एन० एम० भिडे, मनोरंजन, 1925
40. केशवसुतांचे अन्तरंग—भी० के० आम्बेकर, मनोरंजन, मार्च 1918
41. केशवसुत यांची कविता—एन० एम० भिडे—विविध ज्ञान विस्तार, अंक-6, जून 1919
42. केशवसुतांची अभिनव काव्यरचना—आर० के० लागू—नवयुग, अक्टूबर-नवम्बर 1921
43. केशवसुतांची कविता—भी० बी० पटवर्द्धन, रत्नाकर, सेप्टेम्बर 1919
44. केशवसुतांची सम्प्रदाय—जी० टी० माडखोलकर, नवयुग, जुलाई 1919
45. तुतारी वाङ्मय व दसरा—भी० एस० खाण्डेकर, नवयुग, अगस्त-सेप्टेम्बर 1929
46. केशवसुतांची परम्परे विषयीं कांहीं त्रोटक विचार—प्रो० एस० बी० रानडे, महाराष्ट्र साहित्य, अगस्त और अक्टूबर 1923
47. केशवसुत (काव्य)—आर० एस० जोग—प्रदक्षिणा 1949
48. केशवसुतांची कविता—प्रिन्सिपल, भी० वी० पटवर्द्धन, रत्नाकर, जनवरी 1926
49. केशवसुतांची कविता—भी० के० ताटके, मनोरंजन, दिसम्बर 1930
50. केशवसुतांच्या कवितेचा अभ्यास—ए० एम० जोशी, सह्याद्रि, सेप्टेम्बर 1940
51. कवि केशवसुत—(एक बाजू)—एच० एस० शेणोलीकर फर्गूसन कालेज पत्रिका, सेप्टेम्बर 1940
52. नव्या युगांचा काव्यप्रणेता—ए० एच० जोशी, फर्गुसन कालेज पत्रिका, फरबरी 1941
53. अभिप्राय (केशवसुतांची कविता)—एन० सी० केलकर, केशवसुतांची कविता, चतुर्थ संस्करण
54. केशवसुत—एन० के बेहरे 'केशवसुतांची कविता' चतुर्थ संस्करण
55. काव्य आणि क्रान्ति—ए० आर० देशपाण्डे, अभिरुचि, सेप्टेम्बर-अक्टूबर 1944

56. केशवसुतांची कविता—आचार्य भागवत—'सत्यकथा, फरवरी 1948
57. केशवसुत—लालजी पेण्डसे—सत्वकथा, फरवरी 1948
58. केशवसुत—पी० सी० दाभले—युगवाणी, नवम्बर 1947
59. तुतारीचे पडसाद—टी० एस० कारखानीस—नवभारत, जनवरी 1951
60. केशवसुत (कांहीं विचार)—डब्लू० एल० कुलकर्णी, साहित्य, अक्टूबर 1947
61. कविश्रेष्ठ केशवसुत—मनोहर देशपाण्डे, रोहिणी, अप्रिल 1949
62. पुन्हा केशवसुत—वसन्त कानेटकर, साहित्य, सई, 1950
63. केशवसुत आणि ताम्बे—एस० के० क्षीरसागर साहित्य, जुलाई 1950
64. केशवसुतांचा निसर्ग विषय रहस्यवाद—के० एम० आराध्ये, युगवाणी, जुलाई-अगस्त 1948
65. केशवसुत आणि सामाजिक क्रान्ति—'नाथमाधव', वाङ्मयशोभा, फरवरी 1951
66. केशवसुतांचा एका कविते चा इतिहास—एस० वी० रानडे, सत्यकथा, अक्टूबर 1953
67. केशवसुतांचा व्यक्तिवाद आणि वास्तवाधिष्ठित ध्येयवाद—आर० एस० वालिम्बे—लोकमान्य, दिवाली अंक, 1954
68. केशवसुतांची स्वप्नसृष्टि—शिवराम अत्तरदे, युगवाणी, अगस्त, सेप्टेम्बर, अक्टूबर 1947, फरवरी, अप्रिल-मई, 1948
69. युगपवर्त्तक केशवसुत—भी० ए० कुलकर्णी, वलवन्त, 23-11-55
70. केशवसुत स्मृतिदिना निमित्तानें शिरीष अत्रे, नवयुग, 13-11-55
71. केशवसुत आणि मराठी काव्यांची पंचास वर्षे—बी—पी० मोहरिर यशवन्त, नवम्बर 1955
72. केशवसुतांचा पुरोगामी दृष्टिकोण—ए० एस० शेटये, दैनिक लोकमान्य, 13-11-55
73. केशवसुत—आर० एस० वैद्य, दैनिक नवशक्ति, 7-11-55
74. केणवसुतांची तुतारी (टिपणें)—जी० वी० ग्रामोपाध्ये, 'छन्द'—सेप्टेम्वर-अक्टूवर 1955
75. केशवसुत काव्यचर्चा—जुलाई, सेप्टेम्वर, अक्टूवर, उषा, वर्ष 3
76. बण्डवाला कवि—डी० डी० जवारकर, रोहिणी, मार्च, 1955

नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ताक सौजन्यसँ प्राप्त पुस्तक—

जकर उपयोग एहि पुस्तकक आधाररूपमे कएल गेल अछि—

1. समग्र केशवसुत—सम्पादक—प्रो० वी० एस० पण्डित
   प्रकाशक—भेनस पब्लिशर्स पूना, मार्च, 1918
2. केशवसुत—रामचन्द्र श्रीपाद जोग, प्रकाशक—केशव भिखाजी ढवले, वम्बई-2, 1947
3. केशवसुत—काव्य आणिकला, सम्पादक—भी० एस० खाण्डेकर, देशमुख आणि कम्पनी-22, कसवा पूना-2, 1956
4. झपूझी, सम्पादक—प्रो० भी० एम० कुलकर्णी तथा प्रो० जी० एम० कुलकर्णी,
   प्रकाशक—विदर्भ मराठावाड़ा बुक कम्पनी, पूना-2, 1963

आभार प्रदर्शन

1. मराठीमे आकाशवाणी वार्त्ता : ए० आर० देशपाण्डेक "केशवसुतक प्रेम कविता तथा आध्यात्मिक कविता" विषय पर वार्त्ता
2. राष्ट्रवाणी, पूना, मार्च-अप्रिल, 1966, केशवसुत विशेषांक (हिन्दीमे)
3. स्वर्गीया कुसुमावती देशपाण्डेक "मराठी साहित्यक इतिहास"क अंग्रेजी पाण्डुलिपि।

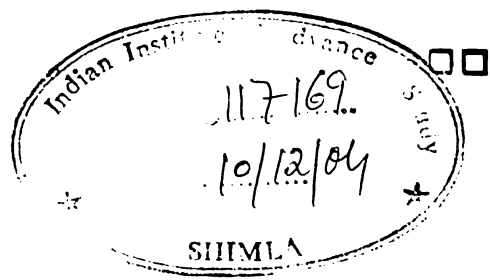

केशवसुतक नाम सुनि मराठीकाव्यरसिकक मनमे ओहने भाव जाग्रत होइत अछि जेहन भाव सुब्रह्मण्य भारतीक नामसँ तमिलभाषाभाषीकेँ, अथवा नर्मदक नामसँ गुजराती भाषाभाषीकेँ होइत छलन्हि। ई लोकनि अपन-अपन भाषामे आधुनिक कविताक अग्रदूत थिकाह, तथा समसामयिक भारतीय साहित्यक प्रमुख सीमा-स्तम्भ थिकाह। पाश्चात्य सांस्कृतिक प्रभावक फलस्वरूप एहि देशमे राष्ट्रीय जागरण कोनरूपमे आएल, से हिनका लोकनिक जीवन-वृत्तसँ बोधगम्य भए रहल अछि।

ई कथन यथार्थ अछि जे 'मराठी कविताक क्षेत्रमे हिनक अवदान ओहने महत्त्वपूर्ण अछि जेहन मराठी उपन्यासक क्षेत्रमे हरीनारायण आपटेक अछि,—ई एहिमे कारयित्री शक्ति नियोजित कएल।' अन्यान्य युगप्रवर्त्तक कवि जकाँ इहो प्रशिक्षु रहि अभ्यास तथा प्रयोग कार्य कएने रहथि। किन्तु जखन हिनका यथार्थ अभिव्यञ्जना शैली अवगेत भए गेलैन्हि तखन ई मराठी कवितामे एकटा नवयुगक स्रष्टा बनि गेलाह।

केशवसुतक शतवार्षिकीक अवसर पर श्रद्धाप्रदर्शनक रूपमे ई कृति साहित्य अकादेमी द्वारा सर्वप्रथम १९६६ ई० मे प्रकाशित कएल गेल छल। ई यद्यपि मराठीभाषामे अपन रचना कएने रहथि तथापि हिनका पर समस्त भारतवर्ष केँ अधिकार छैक।

Library IIAS, Shimla
MT 891.461 3 K 481 M
00117169

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

आवरण शिल्प : सत्यजित रे

स्केच चित्र : श्यामल सेन